मोबी डिक

मोबी डिक

हरमन मेलविल के प्रसिद्ध उपन्यास 'मोबी डिक'
का सरल हिन्दी रूपान्तर

रूपान्तरकार : श्रीकान्त व्यास

मूल्य : बीस रुपये (20.00)

संस्करण : 2000 © प्रकाशक

Abridged Hindi version of MOBY DICK by Herman Melville

शिक्षा भारती, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली

मोबी डिक

मेरा नाम इस्माइल है। कुछ साल पहले की बात है। मेरे पास बहुत कम पैसे रह गए थे—मेरा बटुआ लगभग खाली हो चुका था। अपना खर्च चलाने के लिए मैं सोचने लगा कि अब मुझे क्या करना चाहिए। ऐसे मौके मेरी ज़िन्दगी में दो-तीन बार पहले भी आ चुके थे। तब मैंने शहर में कोई नौकरी ढूंढ़ने के बजाय किसी जहाज़ पर काम करना अधिक अच्छा समझा था। इस बार भी मैंने सोचा कि कुछ दिनों के लिए किसी जहाज़ पर नौकरी कर लूं। जहाज़ पर काम करने का वैसे भी मुझे शौक था। इसमें दुनिया के दूर-दूर के देशों की यात्रा करने का मौका मिलता है। तरह-तरह के आदमियों से पाला पड़ता है और हर बार नये अनुभव होते हैं।

अपनी पिछली यात्राओं में मैंने व्यापारी जहाज़ों पर ही काम किया था। व्यापारी जहाज़ समुद्र में बहुत संभलकर चलते हैं। जाने-पहचाने रास्ते को छोड़कर वे कभी भी इधर-उधर भटकने की या अनजान समुद्रों में यात्रा करने की कोशिश नहीं करते। इसलिए इस बार मैं किसी ऐसे जहाज़ की खोज में था जो किसी साहसपूर्ण यात्रा की तैयारी कर रहा हो। ऐसी यात्रा में जो अनुभव होते हैं वे बिलकुल अनूठे होते हैं। मैंने सुन रखा था कि जो जहाज़ ह्वेल मछली का शिकार करने के लिए जाते हैं, उनमें साहसपूर्ण यात्राओं का मज़ा आता है। इस बार मैंने ऐसे ही किसी

जहाज़ पर काम करने का निश्चय किया।

मेरा शहर बन्दरगाह के पास तो था ही। अपने जान-पहचान के जहाज़ियों और मछियारों से पूछने पर मुझे पता चला कि अगर मैं कुछ कोशिश करूं तो किसी मछियारे जहाज़ पर काम मिल सकता है। अपनी पिछली समुद्री यात्राओं में मैंने कई बार ह्वेल मछली देखी थी। ह्वेल मछलियों में तो सबसे बड़ी होती ही है, वह वैसे भी इस पृथ्वी पर पाए जाने वाले जीवों में सबसे बड़ा जीव है। कोई-कोई ह्वेल तो एक छोटे जहाज़ के बराबर बड़ी होती है। जब वह तैरती है तो लगभग सारा शरीर पानी में डूबा रहता है। यों तो वह गोता लगाकर ही तैरती है और पानी की सतह पर बहुत कम आती है, लेकिन जब पानी की सतह पर आती है तो ऐसा लगता है जैसे पानी में से कोई पहाड़ निकल रहा हो। अपनी नाक के छेद से वह काफी ऊंची फुहार छोड़ती है और फिर सांस खींचकर पानी में डुबकी लगा सकती है। सबसे बड़ी नाव को वह अपने एक धक्के से उलट सकती है। ह्वेल का शिकार भी अपने-आप में बड़ा रोमांचक होता है। दूर से ही मल्लाह उस पर रस्सियों में बंधे हुए कांटेदार बर्छे फेंकते हैं। इन कांटेदार बर्छों को 'हारपून' कहते हैं। ह्वेल के शिकार में अकसर जहाज़ियों को ज़िन्दगी और मौत की लड़ाई लड़नी पड़ती है। अब मैं इन सारी बातों को खुद अनुभव करना चाहता था।

मैंने अपनी एक-दो कमीज़ें अपने पुराने थैले में रखीं। उसे अपनी बगल में दबाया और चल पड़ा। उसी दिन शाम को मैं न्यू बेडफोर्ड नगर में जा पहुंचा। दिसम्बर का महीना था और शनिवार की रात थी। मुझे यह जानकर बड़ी निराशा हुई कि ननटुकेट जानेवाला छोटा जहाज़ जा चुका है और अब दूसरा जहाज़ सोमवार से पहले नहीं जाएगा।

अब मुझे ननटुकेट बंदरगाह को जाने के पहले एक रात और एक दिन और फिर एक रात न्यू बेडफोर्ड में बितानी थी।

मुझे यह चिन्ता सताने लगी कि इस बीच मैं कहां रहूंगा और अपने खाने-पीने का क्या इन्तज़ाम करूंगा। मैंने सोचा कि अगर कोई बहुत सस्ती-सी सराय मिल जाए तो मेरा काम चल सकता है। फिर मैंने लोगों से पूछताछ की तो पता चला कि बंदरगाह के पास ही ऐसी कुछ सरायें हैं। मैं धीरे-धीरे आगे बढ़ा। मैं बंदरगाह के पास गलियों में जा पहुंचा। एक संकरी गली के अन्त में मुझे पत्थर का एक पुराना-सा घर मिला, जिसकी एक खिड़की में से मोमबत्ती का धुंधला प्रकाश बाहर सड़क की बर्फ पर फैला हुआ था। पास जाकर मैंने देखा, उसके दरवाज़े पर एक टूटी हुई तख्ती हवा में खड़खड़ा रही थी। उस पर लिखा था—'स्पाउटर सराय' और इसके नीचे लिखा था –'मालिक : पीटन कफिन'। अन्दर पहुंचकर मैंने देखा कि एक गन्दे-से कमरे के एक कोने में टेबल पर एक मोमबत्ती टिमटिमा रही थी। टेबल के पास गन्दे कपड़े पहने हुए कुछ जहाज़ी बैठे थे और ज़ोर-ज़ोर से बहस करते हुए जुआ खेल रहे थे। जब मैंने उनसे सराय के मालिक के बारे में पूछा तो उन्होंने एक कोने में ऊंघते हुए एक दुबले-पतले बूढ़े की ओर इशारा कर दिया।

मैंने उससे पूछा, "क्या इस सराय में कोई कमरा खाली है?"

जवाब में वह ज़ोर से गर्दन हिलाने लगा। फिर हाथ फैलाकर बोला, "नहीं बाबा, यहां कोई खाली जगह नहीं है।"

उसके बात करने के ढंग से मुझे बड़ी चिढ़ हुई। मैंने झुंझलाकर कहा, "कमरा खाली नहीं है तो न सही, रात बिताने की कोई जगह तो मिल जाएगी? मैं बहुत थका हुआ हूं और बहुत दूर से आया हूं। इतनी ठंडी रात में मैं अब कहां जाऊंगा?"

"मजबूरी है। मैं क्या कर सकता हूं!" उस बूढ़े ने मुझे सिर से पैर तक देखते हुए कहा। फिर एक उंगली से अपना माथा खटखटाते हुए वह कुछ देर तक सोचता रहा और बोला, "अगर तुम किसी के साथ एक ही बिस्तर पर सो सकते हो तो मैं तुम्हारा इन्तज़ाम कर दूंगा। एक हारपूनिया उस कमरे में ठहरा है। कमरे में एक ही बिस्तर है और एक ही कम्बल है। मेरा ख्याल है कि तुम भी किसी ह्वेल जहाज़ पर जा रहे हो। तुम्हें किसी हारपूनिये के साथ सोने में एतराज नहीं होना चाहिए।"

मैं आज तक कभी किसी आदमी के साथ नहीं सोया था, लेकिन अब कोई चारा नहीं था। ऐसी ठंडी रात में दूसरी कोई जगह ढूंढ़ने की हिम्मत मुझमें बाकी नहीं थी। मैंने सोचा कि अगर वह हारपूनिया ढंग का आदमी हो तो उसके साथ सोने में हर्ज ही क्या है। मैं राज़ी हो गया। खाना खाने के बाद जब मैं उठा तो कफिन एक मोमबत्ती से रास्ता दिखाता हुआ मुझे एक छोटे से कमरे में ले गया। उस कमरे में एक बड़ा-सा पलंग बिछा हुआ था और एक कोने में एक टूटी हुई मेज़ रखी थी। मेज के पास ही एक बड़ा-सा थैला पड़ा था। यही उस हारपूनिये का सामान था। मोमबत्ती को टेबल पर टिकाकर रखने के बाद जब वह जाने लगा तो मैंने उससे पूछा, "मिस्टर कफिन। यह हारपूनिया कब तक आएगा? मुझे तो नींद आ रही है।"

वह बोला, "नींद आ रही है तो तुम सो जाओ। जब वह आएगा तो मैं उसे बता दूंगा। पता नहीं, आज कहां अटक गया। रोज़ तो जल्दी ही आ जाता था। लगता है, वह आज अपनी खोपड़ी नहीं बेच पाया।"

"खोपड़ी?" मैं चौंका, "कैसी खोपड़ी? तुम किस खोपड़ी की बात कर रहे हो?"

वह बोला, "घबराओ नहीं। इसमें कोई घबराने की बात नहीं है। वह एक पुराना जहाज़ी है। वह अपनी यात्राओं से अकसर ऐसी ही चीज़ें ले आता है और यहां बेचकर कुछ रुपया बना लेता है। इस बार वह न्यूजीलैंड से मनुष्य की कुछ पुरानी खोपड़ियां खरीद लाया है। इन खोपड़ियों को वहां सुगन्धित चीज़ों में संभालकर रखा जाता है। सैलानी लोग अकसर इन्हें

खरीद लेते हैं। एक दिन जब वह हापूनिया चार खोपड़ियों को प्याज़ की तरह एक रस्सी में पिरोकर बेचने जा रहा था तो मुझे भी बड़ा अजीब-सा लगा था। मैंने उस दिन उसे मना भी किया था, लेकिन वह अपना किराया नियमित रूप से दे देता है और मुझे तंग नहीं करता है, इसलिए मुझे क्या ? वह खोपड़ी बेचे या समूचा आदमी ही बेचे। वैसे तुम्हें कोई खतरा नहीं है। वह तुम्हें तंग नहीं करेगा। मैं उससे कह दूंगा।"

रात काफी हो गई थी। मुझे ऐसा लग रहा था कि शायद हारपूनिया अब नहीं लौटेगा या अगर लौटेगा भी तो बहुत देर के बाद। इसलिए मैंने सोने की तैयारी की। अपना थैला एक कोने में रखकर और कपड़े बदलकर मैं बिस्तर में घुस गया। लेटे-लेटे ही मैंने फूंक मारकर मोमबत्ती बुझा दी। काफी देर तक मुझे नींद नहीं आई। मैं लेटे-लेटे आगे की अपनी यात्रा के बारे में और हारपूनिये के बारे में सोचने लगा। फिर पता नहीं कब मेरी आंख लग गई।

काफी देर बाद नींद में ही मुझे गलियारे में किसी के भारी कदमों की आवाज़ सुनाई दी और मेरी आंख खुल गई। कोई आदमी मोमबत्ती लिए मेरे कमरे के दरवाज़े की ओर बढ़ा आ रहा था, शायद वह हारपूनिया ही था। मैं चुपचाप अन्धेरे में लेटा रहा। मैंने तय कर लिया कि जब तक वह मुझसे नहीं बोलेगा, मैं भी चुप रहूंगा। थोड़ी ही देर में एक हाथ में मोमबत्ती और दूसरे हाथ में एक अजीब-सी खोपड़ी लिए वह कमरे में घुसा। उसने बिस्तर की ओर नहीं देखा। मोमबत्ती को मुझसे काफी दूर एक कोने में फर्श पर रखकर वह अपने बड़े थैले की रस्सियों की गाँठ खोलने लगा। मैं उसका चेहरा देखने के लिए उत्सुक था। लेकिन वह मेरी ओर पीठ करके बैठा था। उसे शायद पता नहीं था कि उसके बिस्तर पर कोई लेटा हुआ है।

थोड़ी देर बाद जब मोमबत्ती के प्रकाश में मुझे उसके चेहरे का एक हिस्सा दिखाई दिया तो मेरे मुंह से एक चीख निकलते-

निकलते रह गई। ऐसा भद्दा और बदसूरत चेहरा मैंने पहले कभी नहीं देखा था। वह वास्तव में कोई आदिवासी ही था। उसका रंग गहरा बैंगनी-सा था। न उसे काला कहा जा सकता था और न तांबे के रंग जैसा। उसके गालों पर गोदने के बड़े-बड़े काले दाग थे। ऐसे ही दाग मुझे उसके हाथों पर भी दिखाई दिए। मैं तय नहीं कर पा रहा था कि यह कोई रेड-इंडियन आदिवासी है या अफ्रीका का कोई हब्शी ! उधर वह खोपड़ी को झोले में ठूंसने के बाद अब उठ खड़ा हुआ था और किसी जानवर की खाल से बने अपने भद्दे-से टोप को उतार रहा था। मैंने देखा कि उसके माथे पर बहुत थोड़े बाल थे। लगभग गंजा ही था। बाद में जब वह कपड़े उतारने लगा तो मैंने देखा कि उसकी छाती और पीठ पर भी वैसे ही बड़े-बड़े काले गोदने के दाग बने हुए थे। ऐसे जंगली आदमी के साथ मुझे एक ही बिस्तर में रात बितानी होगी, यह सोचकर मैं कांप उठा।

अचानक वह भारी कदमों से चलता हुआ दूसरे कोने में गया और लबादे में हाथ डालकर उसने उसकी जेब में से एक छोटी-सी, लेकिन बिलकुल काली लकड़ी की मूर्ति निकाली। उसे खिड़की के सामने रखकर वह घुटने टेककर बैठ गया और कुछ प्रार्थना करने लगा। फिर उसने अपनी जेब में से लकड़ी की कुछ छीलन निकालकर उसे मूर्ति के आगे जलाया और कमरे में धुआं कर दिया। फिर एक भद्दा और बड़ा-सा बिस्कुट निकालकर उसने मूर्ति को भोग लगाया। इसके बाद मूर्ति को फिर से लबादे में रखकर उसने आदिवासियों जैसा एक लम्बा-सा पाइप सुलगाया। फिर पाइप मुंह में दबाकर और मोमबत्ती को फूंक मारकर वह बिस्तर पर आ बैठा।

अचानक उसका हाथ मेरे सिर से जा टकराया और मैं कुछ बोलूं, इसके पहले ही वह मेरा सिर टटोलकर ज़ोर से चिल्ला पड़ा, "कौन है रे तू ? बोल कौन है ? मैं तेरी जान ही ले लूंगा !" हड़बड़ी में उसके मुंह का पाइप बिस्तर पर गिर गया और

चिनगारियाँ इधर-उधर फैलने लगीं।

मैं भी बुरी तरह घबरा गया। साथ ही मुझे लगा कि यह जंगली कहीं सचमुच मेरा गला न दबा दे, इसलिए मैं भी ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर सराय वाले को आवाज़ देने लगा।

सराय वाले ने शायद हमारी आवाज़ें सुन ली थीं, क्योंकि थोड़ी ही देर में वह हाथ में मोमबत्ती लिए हमारे कमरे में आ खड़ा हुआ। उसे देखते ही वह जंगली चीखा, "क्यों बे कफिन के बच्चे! यह किसको मेरे बिस्तर में सुला रखा है? सुबह ही मैंने तुमको किराया दिया है फिर यह क्या मामला है?"

तब तक मैं बिस्तर से कूदकर दरवाज़े में सराय वाले के पास जा खड़ा हुआ। सराय वाला अपने दाँत दिखाकर बोला, "अरे भाई, तुम चुपचाप अपने कमरे में चले आए। मुझसे मुलाकात होती तो मैं पहले ही तुम्हें सब कुछ बता देता। खैर, अब भी कुछ नहीं बिगड़ा है। कीकेग, तुम भी भले आदमी हो और यह भी एक भला आदमी है। मैंने सोचा कि दो भले आदमी एक साथ रात बिता सकते हैं। बिस्तर काफी बड़ा है। इसे एक तरफ सोया रहने दो। इतनी ठंडी रात में बेचारे को कहीं ठहरने की जगह नहीं मिल रही थी।"

"तो यूं कहो न!" कीकेग कुछ नरमाई से बोला। मैं बहुत झुंझला रहा था, लेकिन मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि कीकेग नाम का वह हारपूनिया किसी तरह की लड़ाई नहीं करना चाहता था। उल्टा वह हाथ के संकेत से मुझे पास बुलाते हुए बोला, "आओ, आओ भाई! अपनी जगह सो जाओ।"

मैंने भी बात को ज़्यादा बढ़ाना ठीक नहीं समझा। मैं चुपचाप अपनी जगह जाकर लेट गया। कुछ ही देर में मुझे नींद आ गई।

2

दूसरे दिन सुबह जब मेरी आंख खुली तो दिन निकल आया था। मैंने देखा कि कीकेग की बांह बड़े प्रेम से मेरे गले में पड़ी हुई थी। मैंने धीरे से उसकी बांह परे हटा दी। इस पर उसकी भी आंखें खुल गईं और लेटे-लेटे कुछ देर तक मुझे देखने के बाद मुस्कराने लगा। दिन के उजाले में अब वह उतना डरावना नहीं लग रहा था, हालांकि वह भद्दा और बेढंगा ज़रूर था। उसके मुस्कराने के ढंग से मुझे लगा कि वह मुझसे दोस्ती करना चाहता है। जवाब में मैं भी मुस्करा दिया। उसने मेरा नाम पूछा और थोड़ी देर में इधर-उधर की बातें करने के बाद वह एकदम बिस्तर से उछलकर खड़ा हो गया। थोड़ी देर तक खिड़की से बाहर देखने के बाद वह हाथ-मुंह धोने चला गया।

थोड़ी देर में तैयार होकर और अपना हारपून कंधे पर रख-कर कीकेग कमरे से बाहर चला गया। मैं भी तैयार होकर उसके पीछे-पीछे ही बाहर निकला।

उस दिन इतवार था और मेरे पास करने के लिए कोई काम नहीं था। मैं इधर-उधर सड़कों पर घूमता हुआ शहर देखने के लिए निकल पड़ा। मैंने बन्दरगाह और गोदियों का एक चक्कर लगाया और वहां खड़े हुए छोटे-बड़े जहाज़ों को भी देखा। इसके बाद मैं यों ही घूमता एक चर्च में पहुंच गया। वहां से निकलकर सीधा सराय में पहुंचा, क्योंकि मुझे भूख लगी हुई थी और अब खाने का समय भी हो रहा था।

सराय में पहुंचने पर मैंने देखा कि खाने के कमरे में बहुत-से लोग जमा थे, जो सभी मल्लाह या मछुए नज़र आते थे। वे सभी खाना खाने के लिए वहां जमा हुए थे। कीकेग एक कोने में चुप-चाप बैठा अपनी उसी लकड़ी की मूर्ति को एक चाकू से छील रहा था। मैं उसके पास जा पहुंचा। मुझे देखकर वह खुश हुआ और बोला, "मैंने अपने हाथ से यह मूर्ति बनाई है। इसकी नाक कुछ ठीक नहीं बनी है। उसे मैं ठीक कर रहा हूं। आओ बैठो, खाना लगने में अभी देर है।"

मैं उसके पास ही बैठ गया और इधर-उधर की बातें करने लगा। अब हम लोगों में खासी गहरी दोस्ती हो गई थी। वहां बैठे हुए लोग हम दोनों को इस तरह घुलते-मिलते देखकर कुछ आश्चर्य कर रहे थे। एक काले हब्शी और एक गोरे की दोस्ती वास्तव में उनके लिए नई बात थी।

कीकेग ने मेरे साथ ही खाना खाया और हम लोग हंसी-मज़ाक करते हुए कमरे में लौट आए, कमरे में आने पर उसने अपना पाइप सुलगाया और मुझे भी पीने के लिए दिया। हम लोग बारी-बारी से पाइप पीते रहे और आगे की अपनी-अपनी योजनाएं बनाते रहे।

मैंने कीकेग को बताया कि मैं भी एक जहाज़ी हूं और अब तक दो-तीन बार व्यापारी जहाज़ों में यात्रा कर चुका हूं और अब किसी ह्वेल मछियारे जहाज पर यात्रा करना चाहता हूं तो वह बड़ा खुश हुआ। वह तो कई सालों से ह्वेल का शिकार करता रहा था। उसने अपने कई अनुभव भी सुनाए। उसे बोलने में थोड़ी कठिनाई होती थी। वह अटक-अटककर बोलता था और अपनी बहुत-सी बात हाथ के इशारे से समझाने की कोशिश करता था। उसने कहा, "इस्माइल, यह तो बड़ी अच्छी बात है। हम लोग साथ रहेंगे तो बड़ा मज़ा आएगा। मैं ह्वेल के शिकार के लिए ही जा रहा हूं।"

बातों के दौरान कीकेग ने अपनी जीवन-कहानी मुझे सुनाई।

उसने कहा, "मैं दूर दक्षिण-पश्चिम में स्थित रोकोवोके नामक द्वीप का रहने वाला हूं। मेरे पिता उस द्वीप के राजा हैं। उनके राज में कई छोटे-छोटे राजा भी हैं। मैं उनका अकेला राजकुमार हूं। उनके मरने पर राजगद्दी मुझे ही मिलने वाली है। लेकिन मैं राजा नहीं बनना चाहता। इसके अलावा इधर-उधर घूमते रहने के कारण मेरा धर्म भी भ्रष्ट हो गया है। काफी दिनों से ईसाइयों के बीच रहने के कारण मैंने ईसाइयों का धर्म अपना लिया है। हालांकि मन से अभी तक मैं अपने धर्म का पुजारी हूं, इसीलिए मैं देवी योजो की मूर्ति अपने साथ रखता हूं।

"जब मैं छोटा था, तभी से मुझे समुद्री यात्रा का बड़ा शौक था। एक बार हमारे द्वीप के बन्दरगाह में एक बड़ा जहाज़ आया। जहाज़ के कप्तान से मैंने अपने को साथ ले चलने के लिए कहा, लेकिन वह बिलकुल राज़ी नहीं हुआ। मैंने भी तय कर लिया था कि मैं इसी जहाज़ पर जाऊंगा। इसलिए मैंने एक नाव ली और उस जगह पहुंच गया। जहां छोटी-सी खाड़ी पड़ती थी और जिसके भीतर होकर जहाज़ को गुज़रना था। जब जहाज़ उधर से गुज़रने लगा तो मैं अपनी नाव से उसके पास पहुंच गया। फिर मैंने अपने पैर के धक्के से नाव को उलट दिया और जहाज़ के नीचे लटकी हुई एक ज़ंजीर को पकड़ चुपचाप उसके ऊपर जा पहुंचा। कप्तान ने मुझे बहुत डांटा-फटकारा और समुद्र में फेंक देने की धमकी दी, लेकिन मैं टस से मस नहीं हुआ।

"अन्त में उसने मुझे एक जहाज़ी के रूप में अपने यहां काम पर रख लिया। वह जहाज़ ह्वेल के शिकार पर जा रहा था। तुम्हें पता ही होगा कि ऐसा जहाज़ कम से कम तीन साल के लिए समुद्र यात्रा पर निकलता है। मैं शुरू में तीन साल तक उस जहाज़ पर रहा। थोड़े ही दिनों में मैं ह्वेल का शिकार करना सीख गया। बस, इसके बाद से मैं बराबर ऐसे ही जहाज़ों में काम

करता रहा हूं। बीच में एक-दो बार मैं घर भी गया हूं, लेकिन वहां अब मेरा मन नहीं लगता।"

दूसरे दिन सुबह जब हम लोग नाश्ता करने के लिए तैयार होने लगे तो कीकेग ने मुझे कमरे में बड़े प्यार से अपने पास बिठाया और अपने थैले में से निकालकर वह खोपड़ी मुझे भेंट कर दी। इसके बाद उसने कुछ चांदी के सिक्के निकालकर सामने मेज़ पर रखे। यही उसका सारा धन था। उसने उन सिक्कों को बराबर दो भागों में बांटा और फिर एक भाग मुट्ठी में भरकर चुपचाप मेरी जेब में डाल दिया। मैं उसे रोकने लगा तो बोला, "नहीं, इस्माइल, यह सब तुम्हारा है। तुम इसे ले लो। हम दोनों अब एक साथ रहेंगे और एक-दूसरे की मदद करेंगे।"

मुझे कीकेग की भेंट स्वीकार करनी पड़ी। मेरा मित्र देखने में बदसूरत भले ही था, लेकिन दिल उसका बहुत साफ था। उसके मन में किसी तरह की लाग-लपेट नहीं थी। नाश्ता करके हम लोग बन्दरगाह की ओर जाने की तैयारी करने लगे। मैंने वह खोपड़ी एक नाई के हाथ बेच दी और उससे जो धन मिला, उससे मैंने सराय का किराया चुका दिया। फिर ठीक समय पर हम बन्दरगाह पहुंचे। वहां से एक जहाज़ ननटुकेट द्वीप के लिए रवाना होने वाला था। हम उस पर सवार हो गए और शाम तक ननटुकेट जा पहुंचे।

ननटुकेट एक बड़ा सुन्दर छोटा-सा द्वीप है और लम्बी यात्रा के लिए जाने वाले जहाज़ियों और मल्लाहों का प्रसिद्ध अड्डा है। ह्वेल के शिकार के लिए जानेवाले जहाज़ आमतौर से यहीं से रवाना होते हैं। ननटुकेट पहुंचकर हमने एक छोटे-से होटल में डेरा डाला। इस होटल का पता हमें अपने पिछली सराय के मालिक मिस्टर कफिन ने दिया था। उसने बताया था कि ननटुकेट में उसके चचेरे भाई का होटल है। किसी तरह खोजते हुए हम लोग उस होटल के दरवाज़े पर पहुंच गए। वहां एक मोटी-सी स्त्री एक हब्शी लड़के को ज़ोर-ज़ोर से डांट रही थी।

बाद में हमें पता चला कि वही होटल की मालकिन थी। और आसपास के लोगों में 'चाची' के नाम से मशहूर थी। जब हमने उसको मिस्टर कफिन का नाम बताया तो वह हमें अपने यहां ठहराने के लिए राजी हो गई।

खाना खाने के बाद जब हम अपने कमरे में जाने लगे तो चाची ने ज़ीने के पास ही हमारा रास्ता रोक लिया और कीकेग से उसका हारपून मांगा। वह बोली, "मैं किसी को भी इस तरह की खतरनाक चीज़ अपने कमरे में रखने की इजाज़त नहीं देती। पिछली बार एक ऐसा ही मछियारा हमारे यहां ठहरा था। बाद में उसने अपने ही हारपून से अपनी हत्या कर ली। इससे मुझे बड़ी परेशानी हुई। तबसे मैं मछियारों से हारपून और बरछे वगैरह बाहर ही रखवा लेती हूं।"

कीकेग को मजबूर होकर अपना हारपून उसे सौंपना पड़ा। जब हम ऊपर पहुंचे तो अपना कमरा देखकर खुश हो गए। कमरा छोटा-सा था, लेकिन था काफी आरामदेह। हमने उसी में डेरा डाल लिया। कीकेग ने कमरे में पहुंचते ही अपने लबादे में से लकड़ी की वह मूर्ति निकाली और खिड़की में उसे बैठाते हुए कहा, "योजो, यहां बैठो!" और फिर मुझसे बोला, "कल मेरा व्रत है। मैं कल कहीं नहीं जाऊंगा। तुम जाकर कोई अच्छा-सा जहाज़ ठीक कर लेना। कल सपने में योजो ने मुझे यही आदेश दिया है।"

दूसरे दिन सुबह मैं जहाज़ की खोज में बन्दरगाह पर पहुंच गया और वहां पूछताछ करने लगा। मुझे वहां तीन जहाज़ों के बारे में पता चला जो तीन-तीन साल के लिए ह्वेल के शिकार पर निकलने वाले थे। मैंने एक-एक जहाज़ को घूमकर देखा। अन्त में मुझे 'पिकोड' नाम का जहाज़ पसन्द आ गया। मैं जहाज़ पर पहुंचकर इधर-उधर चक्कर लगाने लगा और उसका सारा इन्तज़ाम देखने लगा।

इस जहाज़ को बड़े अजीब ढंग से सजाया गया था। देखने

से ही मालूम होता था कि वह कोई शिकारी जहाज है। उस पर जगह-जगह ह्वेल मछलियों की ही बड़ी-बड़ी हड्डियां लकड़ियों की तरह जड़ी हुई थीं। जब मैं जहाज़ के क्वार्टर-डेक पर पहुंचा तो किसी ऐसे अधिकारी को खोजने लगा जिससे मैं अपनी और कीकेग की नौकरी के लिए बात कर सकता। अचानक मेरा ध्यान एक विचित्र प्रकार के तम्बू की ओर गया, जो मस्तूल के पीछे लगा हुआ था। यह तम्बू ह्वेल की बड़ी-सी हड्डियों के लम्बे-लम्बे पटरे जैसे टुकड़ों को आपस में मिलाकर बनाया गया था। इस तम्बू में मुझे कुर्सी पर बैठा हुआ एक आदमी दिखाई दिया। वह बहुत रोब-दाब से बैठा हुआ मुझे घूर रहा था। इससे लगता था कि वह कोई अफसर ही है। मैंने उससे पूछा, "क्या आप ही 'पिकोड' के कप्तान हैं?"

"मान लो कि मैं ही कप्तान हूं। तुम्हें कप्तान से क्या काम है?" उसने कहा।

"मैं जहाज पर चलने की बात सोच रहा था।"

"तुम? तुम जहाज़ पर चलने की बात सोच रहे हो? लेकिन मेरा खयाल है कि इस द्वीप में तुम पहली बार आए हो। ननटुकेट में तो मैंने तुम्हें पहले कभी नहीं देखा। कौन हो तुम? मैं तो बाज़ी लगाकर कह सकता हूं कि तुम्हें ह्वेल के शिकार का भी कुछ पता नहीं है।"

'हां, साहब! आप ठीक कह रहे हैं। ह्वेल के शिकार का मुझे कोई अनुभव नहीं, लेकिन मैंने व्यापारी जहाज़ों में कई यात्राएं की हैं।"

"व्यापारी जहाज़! वे भी कोई जहाज़ होते हैं? कहां शिकारी जहाज़ और कहां व्यापारी जहाज़? लगता है, तुम्हें व्यापारी जहाज़ों में काम करने का बड़ा घमण्ड है! फिर तुम यहां क्या करने के लिए आए हो? शिकारी जहाज़ में तुम्हारा क्या काम?"

मैंने कहा, "साहब, मेरा मतलब यह नहीं है कि मुझे व्यापारी

जहाज़ में काम करने का घमण्ड है। मैं तो सिर्फ यही कहना चाहता हूं कि जहाज़ की यात्रा का मुझे थोड़ा-बहुत अनुभव है और अब मैं ह्वेल का शिकार करना चाहता हूं। मैं दुनिया देखना चाहता हूं।"

"अच्छा, तो तुम देखना चाहते हो कि ह्वेल का शिकार कैसे किया जाता है। वाह-वाह! क्या तुमने कप्तान अहाब को देखा है? उन्हें देख लो तो तुम्हें मालूम हो जाएगा कि यह कितना जोखिम-भरा काम है। तुम तो ऐसे कह रहे हो जैसे यह कोई देखने-दिखाने की चीज़ है, जबकि इसमें आदमी को मौत से खेलना पड़ता है। ज़रा-सी चूक हुई और आदमी ह्वेल के जबड़ों में पहुंच जाता है। कप्तान अहाब की सिर्फ एक ही टांग रह गई है। दूसरी टांग को एक ह्वेल काटकर खा गई!"

मैं उसकी बात से थोड़ा चकराया। अब मैंने भी निश्चय कर लिया कि अगर मुझे ह्वेल के शिकार पर जाना है तो इसी जहाज़ पर जाऊंगा। इधर-उधर की काफी बातें करने के बाद अन्त में वह राज़ी होते हुए बोला, "देखो, मेरा नाम कप्तान पेलेग है। मैं जिद्दी आदमियों को ज़्यादा पसन्द नहीं करता और एक ही बात को बार-बार कहने की मुझे आदत नहीं है। लेकिन खैर, तुम देखने में कुछ ठीक-ठाक मालूम होते हो। मैं तुम्हें जहाज़ के दूसरे मालिक और कप्तान बिल्दाद के पास ले चलता हूं। वहां तुम्हें कुछ कागजों पर दस्तखत करने पड़ेंगे।" यह कहकर वह उठ खड़ा हुआ।

मैं चुपचाप उसके साथ हो लिया। मैंने मन में सोचा, 'तो कप्तान पेलेग इस जहाज़ का मालिक भी है। मैंने सुन रखा था कि कुछ जहाज ऐसे होते हैं, जिनके कई मालिक होते हैं। उनमें से दो-तीन जो खास होते हैं, वे तो जहाज़ के कप्तान ही होते हैं और हमेशा जहाज़ पर रहते हैं। लेकिन बाकी लोगों का रुपया जहाज़ में लगा होता है। पेलेग ने रास्ते में मुझे बताया भी कि इस जहाज़ में सैकड़ों विधवाओं, अनाथों और पेंशन प्राप्त बूढ़ों

के हिस्से हैं जहाज़ियों को भी वेतन न देकर उनके काम के अनुसार मुनाफे में से हिस्सा दिया जाता था। मैं मन ही मन सोचने लगा कि मुझे क्या हिस्सा मिलेगा और कितने पर मुझे राज़ी होना चाहिए।

थोड़ी देर में हम लोग एक बूढ़े आदमी के सामने जा खड़े हुए जो आराम से धूप में कुर्सी डाले बैठा कोई किताब पढ़ रहा था। उसने अपनी आंखों पर एक टूटा हुआ चश्मा लगा रखा था। बाद में पता चला कि साठ साल का यही बूढ़ा कप्तान बिल्दाद है। अपने ज़माने में वह काफी अच्छा हारपूनिया रह चुका था। ह्वेल के शिकार में उसने धन भी बहुत कमाया था। कप्तान पेलेग ने उससे कहा, "बिल्दाद, तुम भी क्या दिनभर बैठे बाइबिल पढ़ते रहते हो! पिछले तीस साल से तुम इसे पढ़ते आ रहो हो। अब इसमें तुम्हारे लिए नया क्या रह गया है। अच्छा सुनो, यह आदमी, क्या नाम बताया तुमने—हां, इस्माइल, यह इस्माइल हमारे जहाज़ पर चलना चाहता है। मेरा खयाल है कि इसे रख लेना चाहिए।"

बिल्दाद ने अपने चश्मे में से मेरी ओर घूरते हुए कहा, "क्यों? क्यों रख लेना चाहिए? इसमें क्या खास बात है?"

मुझे उसका सवाल सुनकर बड़ी हैरानी हुई। दोनों कप्तान मुझे एक-दूसरे से बढ़कर चिड़चिड़े और झगड़ालू मालूम हो रहे थे। मैं सोचने लगा कि ऐसे लोगों के साथ मेरी कैसे निभेगी। काफी बहस के बाद यह तय हुआ कि मुझे मेहनताने के रूप में जहाज़ के मुनाफे का 275वां हिस्सा मिलेगा और तीन वर्षों में मेरे खाने और रहने में जो खर्चा होगा, उसके लिए मुझे कुछ नहीं देना पड़ेगा। मैंने यह शर्त मान ली। कागज़ों पर दस्तखत करने के बाद मैं चला आया।

मैं अभी जहाज़ से नीचे नहीं उतरा था कि अचानक मेरे मन में यह विचार उठा कि अभी एक कप्तान और बाकी है, जिसके मैंने दर्शन नहीं किए। वह है कप्तान अहाब! और वह इन दोनों

से बड़ा मालूम होता है। मैं वापस लौट आया और कप्तान पेलेग के पास जाकर बोला, "क्यों साहब, यह कप्तान अहाब कहां मिलेंगे?"

"क्यों, अब तुम्हें कप्तान अहाब से क्या काम है? ठीक है, तुम इस जहाज़ में भरती कर लिए गए। अब तुम जाओ।"

"मैंने सोचा कि मैं उनसे भी मिल लूं। इसके अलावा मेरा एक साथी और है। वह भी इसी जहाज़ पर काम करना चाहता है।"

इस पर पेलेग ने कहा, "जहां तक तुम्हारे साथी का सवाल है, बिना उसको देखे हम उसके बारे में कुछ नहीं कह सकते। तुम उससे कहना कि वह आकर मुझे मिल ले और कप्तान अहाब से तुम अभी नहीं मिल सकोगे। इस समय वह जहाज़ पर है भी नहीं। वह किनारे पर अपने घर में है और दिनभर वहीं बन्द रहता है। किसी से मिलता-जुलता भी नहीं। पिछले कुछ दिनों से उसका स्वभाव बड़ा अजीब-सा हो गया है। वैसे वह बड़ा शानदार आदमी है और ह्वेल के शिकारियों में उसका नाम सिकन्दर की तरह मशहूर है। वह लिखा-पढ़ा आदमी है और साथ ही बहुत बहादुर भी है। उसके हारपून का निशाना अचूक होता है। स्वभाव भी उसका बुरा नहीं है, लेकिन जबसे उसकी टांग कटी है, तबसे वह अपने-आप में गुमसुम रहता है और बहुत कम बोलता है। कभी-कभी उसे बहुत गुस्सा आता है और वह जंगलियों की तरह चीखने लगता है, लेकिन फिर थोड़ी ही देर में शांत हो जाता है। इस जहाज़ के सभी लोग उसका बहुत आदर करते हैं और उससे डरते भी हैं। इसलिए तुम बिना उसके बुलाए उसके सामने जाने की कोशिश मत करना, वरना तुम्हारे लिए बुरा होगा। वह बहादुर और योग्य आदमियों की इज्जत करता है। अगर वह तुम्हारे काम से खुश हो गया तो खुद ही तुम्हें अपना दोस्त बना लेगा।"
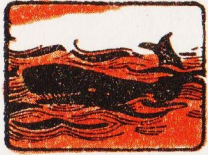
3

उससे विदा लेकर मैं वापस होटल के लिए रवाना हुआ। तीसरे पहर के बाद ही मैं होटल लौटा। वैसे भी मुझे पता था कि आज कीकेग का उपवास और पूजा का दिन है। शाम से पहले उसे छेड़ना ठीक नहीं है। मैं ईसाई हूं और मेरे धर्म में मूर्ति-पूजा मना है, फिर भी मुझे कीकेग और उसके धर्म से कोई एतराज़ नहीं है। मैं सोचता था कि यह आदमी बहुत पिछड़े हुए इलाके से आया है और धीरे-धीरे ही सभ्य बनेगा।

होटल में पहुंचने पर मैं सीधा अपने कमरे तक गया और दरवाज़ा खटखटाने लगा। कोई जवाब नहीं मिला। मैंने दरवाज़ा खोलने की कोशिश की, लेकिन वह भीतर से बन्द था। मैंने ज़ोर-ज़ोर से पुकारा, "कीकेग ! कीकेग !" लेकिन भीतर से कोई जवाब नहीं आया। चाभी के छेद से देखने पर मुझे कमरे में कुछ नहीं दिखाई दिया। मैंने फिर आवाज़ लगाई, "कीकेग, मैं हूं इस्माइल ! तुम बोलते क्यों नहीं हो ? दरवाज़ा खोलो !"

जब दरवाज़ा पीटने और आवाज़ लगाने पर भी कमरे में से कोई नहीं बोला तब मैं दौड़कर नीचे गया। नीचे एक नौकरानी काम कर रही थी। जब मैंने उससे सारी बात बता दी तो वह 'हाय-हाय' कहकर चिल्लाने लगी और बोली, "मुझे तो पहले ही शक हो रहा था कि दाल में कुछ काला है। सुबह से दरवाज़ा बन्द है। मैं नाश्ते के लिए और फिर खाने के लिए कहने को गई तब भी किसी ने दरवाज़ा नहीं खोला और न जवाब दिया।

मुझे लगता है, फिर वही घटना हो गई। आए दिन कोई न कोई मछियारा यहां आकर अपनी जान दे देता है। जैसे मरने के लिए लोगों को कोई और जगह ही नहीं मिलती। मालकिन ! मालकिन !! दौड़ो खून हो गया है ! वह ऊपर वाला शायद मर गया है।"

नौकरानी की चीखें सुनकर चाची रसोई से बाहर निकल आई। मैंने उससे कहा, "जल्दी से एक कुल्हाड़ी दो। मुझे लगता है, कीकेग को कुछ हो गया है। पता नहीं क्यों, वह दरवाज़ा नहीं खोल रहा है। जल्दी से कोई कुल्हाड़ी लाओ।"

मैं बराबर दरवाज़े को धक्के दिए जा रहा था, अन्त में बहुत ज़ोर की आवाज़ हुई और किवाड़ खुल गए। मैं भीतर गिरते-गिरते बचा। भीतर पहुंचने पर मैं यह देखकर चकित रह गया कि कीकेग चुपचाप कमरे के बीचोंबीच फर्श पर पालथी मारे बैठा था और योजो की मूर्ति को अपने सिर पर उठा रखा था।

मैंने पास जाकर कहा, "कीकेग ! कीकेग ! तुम्हें क्या हो गया है ? तुम इस तरह कब से बैठे हो और बोलते क्यों नहीं ?" लेकिन कीकेग ने मेरी बात का कोई जवाब नहीं दिया। वह पत्थर की मूर्ति की तरह बिना हिले-डुले चुपचाप बैठा था और आंखों को बन्द किए हुए था।

अन्त में मैंने सरायवाली से कहा, "चाची, तुम जाओ। मैं ज़रा अकेले में इसे समझाने की कोशिश करूंगा।" यह कहकर मैंने चाची को लगभग ठेलकर कमरे से बाहर कर दिया और दरवाज़ा बन्द कर लिया। अन्दर आकर मैं एक कुर्सी पर बैठ गया, लेकिन कीकेग से अब और कुछ कहना मैंने ज़रूरी नहीं समझा। मुझे लगा कि जब तक इसकी पूजा पूरी नहीं होगी, तब तक यह इसी तरह बैठा रहेगा और किसी की भी नहीं सुनेगा।

सुबह जब मेरी नींद खुली तो थोड़ा-थोड़ा उजाला होने लगा था। कीकेग अब भी उसी तरह आंखें बन्द किए फर्श पर सीधा

तना हुआ बैठा था। मुझे उसकी इस ज़िद पर बड़ी चिढ़ आ रही थी, लेकिन मेरे कुछ बोलने के पहले जैसे ही सूरज की पहली किरण कमरे में घुसी, कीकेग ने अपनी आंखें खोल दीं और फिर वह उछलकर खड़ा हो गया। मेरे पास आकर उसने मेरे से अपना सिर लगाया और प्यार से मेरा गाल थपथपाते हुए बोला, "मेरा रमजान खत्म हो गया !"

मैंने झुंझलाकर कहा, "धन्य हो तुम और तुम्हारा रमजान ! तुम मेरी तरफ से भाड़ में जाओ। भला पूजा-पाठ से तुम्हें क्या मिलेगा ? व्यर्थ ही अपना समय खराब करते हो और अपनी हंसी भी उड़वाते हो।"

कीकेग ने मेरी बात का बुरा नहीं माना। वह बराबर मुस्कराता रहा और योजो की मूर्ति को थैली में ठूंसने के बाद हाथ-मुंह धोने चला गया।

जब वह वापस आया तो मैंने उसे बताया कि 'पिकोड' नाम के जहाज़ पर मैंने सारी बातें तय कर ली हैं। मैं वहां भरती भी हो गया हूं और कप्तान ने तुम्हें बात करने के लिए बुलाया है।

नाश्ता करने के बाद कीकेग अपना हारपून ले आया और हम लोग घाट की ओर चल पड़े। जब हम जहाज़ के पास पहुंचे और अभी घाट पर ही थे कि जहाज़ की डेक पर से कप्तान पेलेग ने आवाज़ लगाकर मुझसे पूछा, "क्यों, यही है तुम्हारा साथी ? मैं जानता हूं कि यह कोई नरभक्षक जंगली है। इसके लिए मेरे जहाज़ में कोई जगह नहीं है। हम सिर्फ ईसाइयों को ही अपने जहाज़ पर काम देते हैं।'

मैं एक क्षण के लिए रुका। मैंने इस स्थिति की कल्पना नहीं की थी। कीकेग को घाट पर ही छोड़कर मैं सीढ़ियां चढ़कर जहाज़ में कप्तान पेलेग के पास जा पहुंचा। मैंने उसे समझाने की कोशिश की कि कीकेग ईसाई भले ही न हो, लेकिन नरभक्षक नहीं है। यह आदिवासियों के एक बहुत बड़े राजा का लड़का है और बचपन से ही ह्वेल का शिकार करता आ रहा है। अब तक कई ह्वेलों को मार चुका है।

इस बीच कप्तान बिल्दाद भी आ पहुंचा था। वह अपना चश्मा ठीक करते हुए बोला, "इन सब बातों में कोई दम नहीं है। हारपून हाथ में लिए फिरने से ही कोई ह्वेल का शिकारी नहीं बन जाता। और फिर सबसे बड़ी बात तो यह है कि हमारे जहाज़ के सभी जहाज़ी ईसाई हैं। वे गैर-ईसाई आदिवासी के साथ काम करना पसन्द नहीं करेंगे।"

मैंने बात बदलने के लिए कहा, "कप्तान साहब ! आप यह कैसे कह सकते हैं कि यह ईसाई नहीं है। ईसाई धर्म की शिक्षाओं को यह भी मेरी और आपकी तरह ही मानता है। यह ईमानदार और भला आदमी है।"

बिल्दाद ने अपनी उंगली हिलाते हुए मुझे चुप रहने का इशारा किया और कहा, "बरखुरदार, इस तरह के लेक्चर मैंने बहुत सुने हैं। इसे इस बात का सबूत देना पड़ेगा कि इसने ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया है।"

पेलेग ने भी कहा, "हां, इसे लिखकर देना पड़ेगा।"

इस अवसर पर मैंने झूठ बोलना ही ठीक समझा। मैंने कहा, "जी हां, भला इसमें इसको क्या एतराज़ हो सकता है ! यह जो आप कहेंगे, वह लिख देगा, लेकिन मेरे साथ इसको भी काम देना पड़ेगा। इसके अलावा यह एक पुराना हारपूनिया है। यह ह्वेल के शिकार के लिए बड़ा काम का सिद्ध होगा।"

मेरी बात सुनकर पेलेग ने वहां से चिल्लाकर सीधे कीकेग से सवाल किया, "क्यों जी, क्या नाम है तुम्हारा ? कीकेग, कीकेग, जो कुछ हो, यह बताओ कि यह हारपून तुमने किस खुशी में उठा रखा है ? इससे कभी कोई मछली-वछली भी मारी है ?"

कीकेग ने उसको घूरकर देखा और फिर बिना एक शब्द बोले वह लपककर जहाज़ पर चढ़ गया। वहां से छलांग लगाता हुआ वह जहाज़ के एक किनारे लपकता हुआ ह्वेल नौका में

कूद गया और अपना हारपून साधकर चिल्लाया, "हुज़ूर कप्तान साहब ! आप वह पानी के ऊपर काला दाग देख रहे हैं ? ज़रा गौर से देखिए। मान लीजिए, वह किसी ह्वेल की आंख है। अच्छा, तो अब यह देखिए।" यह कहकर उसने बिल्दाद के ठीक सिर के ऊपर से जहाज़ के डेकों के पार अपना हारपून फेंका और देखते-देखते उस धब्बे को आंख से ओझल कर दिया। फिर उसने शांति से हारपून की रस्सी खींचते हुए कहा, "तो आपने देखा, वह ह्वेल मर गई !"

पेलेग और बिल्दाद एक-दूसरे का मुंह देखते रह गए। ऐसा सही निशाना शायद उन्होंने पहली बार देखा था। बिल्दाद तो थोड़ा घबरा भी गया था, क्योंकि कीकेग ने जान-बूझकर हारपून उसके सिर पर से फेंका था।

अब कीकेग के लिए रास्ता साफ था। इतने अच्छे हारपूनिये को भला कोई कैसे छोड़ सकता था ! दोनों कप्तानों ने कीकेग को काम देने का फैसला कर लिया। बिल्दाद फौरन रजिस्टर ले आया और उसने कीकेग का नाम उसमें दर्ज कर लिया।

इसके बाद कुछ और कागज़ों पर उससे दस्तखत करने के लिए कहा गया। कीकेग ने दस्तखत की जगह अपने हाथ पर गोदे हुए निशान की तरह का ही एक निशान कागज़ पर बना दिया।

इस तरह कीकेग को भरती कराने के बाद मैं उसके साथ जहाज़ के नीचे उतर आया। हम दोनों जब घाट के किनारे टहल रहे थे तो हमें एक अजीब-से आदमी ने रोककर पूछा, "क्या तुम दोनों इस जहाज़ पर नये भरती हुए हो? भगवान् तुम्हारा भला करे। तुम जानते नहीं हो कि तुमने अपने आपको एक तरह से मौत के हवाले कर दिया है। ह्वेल के लिए तो और भी जहाज़ जाते हैं, लेकिन इस पिकोड जहाज़ की बात दूसरी है। इसके कप्तान के बारे में तुम्हें शायद पता नहीं।"

मुझे वह आदमी आधा पागल-सा लग रहा था। एक अनजान आदमी को इस तरह से रास्ता रोककर उल्टी-सी बातें करने की उसे हिम्मत कैसे हो रही थी—मैं इसी बात पर हैरान था। मैं वहां से आगे बढ़ना चाहता था, लेकिन कीकेग को शायद उस आदमी में कुछ दिलचस्पी हो आई थी। उसने कहा, "तुम किस कप्तान के बारे में कह रहे हो? क्या कप्तान अहाब से तुम्हारा मतलब है?"

वह आदमी बोला, "हां, कप्तान अहाब ही! तुम्हें पता नहीं है कि कप्तान अहाब इस समय आधा पागल हो रहा है। जब से सफेद ह्वेल मछली ने उसकी टांग चबाई है, तबसे वह किसी भी कीमत पर उसी ह्वेल को मारने की योजना बना रहा है। अब वह ह्वेल के शिकार के लिए नहीं, अपने किसी पुराने दुश्मन से बदला लेने के लिए जा रहा है। उसके साथ काम करना किसी आधे पागल के साथ काम करने के बराबर है। खैर, तुम लोगों को मेरी बात समझ में नहीं आएगी। मेरा नाम एलीजा है। मेरी बात याद रखना। अच्छा, खुदा हाफिज़!" यह कहकर वह अचानक मुड़कर एक तरफ चला गया।

मैं उस भिखमंगे जैसे आदमी को काफी देर तक जाते हुए

देखता रहा। मैंने सोचा कि या तो इसका दिमाग खराब है या कप्तान अहाब से यह किसी बात पर चिढ़ा हुआ है। इसकी कही हुई बातों पर बहुत ध्यान देने की ज़रूरत नहीं, कीकेग भी बोला, "जाने दो, कोई सिरफिरा मालूम होता है।"

एक-दो दिन और गुज़र गए। हम लोग अकसर जहाज़ पर घूमने चले जाया करते थे। वहां यात्रा की तैयारियां बड़े ज़ोर-शोर से जारी थीं। तरह-तरह का माल जहाज़ पर लादा जा रहा था। कप्तान पेलेग और कप्तान बिल्दाद को दम मारने की भी फ़ुरसत नहीं थी। तीन साल की लम्बी यात्रा के लिए हर तरह का सामान जहाज़ में भरना ज़रूरी था। सामान को ठीक जगह पर रखवाने और इन्तज़ाम करवाने में जहाज़ के दूसरे मल्लाह भी दिन-रात लगे रहते थे। हम दोनों चूंकि नये थे इसलिए हमारे ज़िम्मे कोई काम नहीं था। कुछ और ज़हाज़ी शहर में इधर-उधर सरायों में ठहरे हुए थे। कुछ उसी द्वीप में रहने वाले थे और वे अपने-अपने घर गए हुए थे।

एक दिन यह खबर फैली कि 'पिकोड' के सभी जहाज़ी अपनी सन्दूकें जहाज़ पर पहुंचा दें, क्योंकि अब जहाज़ किसी भी समय लंगर उठा सकता है। हमने भी अपना सामान जहाज़ पर पहुंचा दिया। जिस दिन हम अपना सामान लेकर जहाज़ पर पहुंचे, वहां एक बूढ़ी स्त्री नौकरों से सामान इधर-उधर रखवा रही थी। बाद में मालूम हुआ कि वह बिल्दाद की बहन है। सब जहाज़ी उसे 'मौसी' कहकर पुकारते थे। मौसी अपने भाई की तरह ही सभी जहाज़ियों से प्यार करती थी और सबके आराम का खयाल रख रही थी। वह बराबर यह देख रही थी कि सबके लिए बिस्तर, कम्बल, कपड़े, तौलिये और रोज़ काम में आनेवाली दूसरी चीजें जहाज़ पर पहुंच गई हैं या नहीं। बिल्दाद को उससे बड़ी मदद मिल रही थी। पेलेग थोड़ी-थोड़ी देर में ह्वेल की हड्डी से बने अपने खेमे में से चिल्लाता हुआ बाहर निकलता था और कभी नीचे काम करने वालों को डांटता

था, कभी मस्तूल की चोटी पर रस्से बांधने वालों को फटकराता था और फिर कागज़ लेकर अपने खेमे में घुस जाता था। एक-दो बार मेरे मन में हुआ कि मैं उससे पूछूं कि क्या कप्तान अहाब जहाज़ पर आ गया है। कप्तान अहाब को देखने और उससे मिलने की मेरी बड़ी इच्छा हो रही थी। उसके बारे में तरह-तरह की बातें मैं सुन चुका था। लेकिन पेलेग या किसी और से पूछने की मुझे हिम्मत नहीं हो रही थी।

अन्त में समाचार मिला कि अगले दिन किसी भी समय पिकोड अवश्य चल पड़ेगा, इसलिए अगली सुबह कीकेग और मैं होटल से बहुत जल्दी निकल गए। सुबह लगभग छह बजे ही हम घाट पर पहुंच गए। मैंने कीकेग से कहा, "चलो, ज़रा जल्दी कदम उठाओ। ऐसा लगता है, जहाज़ अब छूटने ही वाला है। जहाज़ियों की भगदड़ काफी बढ़ गई है। ज़रा ज़ल्दी कदम उठाओ।"

"ज़रा ठहरो मेरे दोस्तो!" अचानक हमारे पीछे से आवाज आई और एलीजा उसी दिन की तरह चिथड़े लटकाए हुए हमारे पास आ खड़ा हुआ और बोला, "तो क्या तुम लोगों ने अपना इरादा बदल दिया? तुम इस जहाज़ पर नहीं जा रहे हो न?"

मुझे उसका इस तरह टोकना अच्छा नहीं लगा। मैंने उसे फटकारते हुए वहां से भगाने की कोशिश की और कहा, "तुम अपना रास्ता देखो। इस समय हमारे पास किसी सिरफिरे से बात करने का वक्त नहीं है।" फिर मैंने कीकेग से कहा, "चलो, कीकेग, यह पागल है।"

लेकिन वह तो जैसे हमारा रास्ता रोककर ही खड़ा हो गया और जहाज़ की ओर अंगुली उठाकर बोला, "तुम्हें ऊपर जहाज़ के उस डेक पर, जहां कप्तान अहाब की कोठरी है, कुछ आदमी दिखाई दे रहे हैं? क्या तुम लोग उन्हें पहचानते हो?"

हम दोनों की नज़रें उस ओर उठ गईं। हमने देखा कि

सचमुच कुछ अनजान-से लोग डेक पर खड़े हैं और देखते-देखते वे बहीं कहीं गायब हो गए। अभी सूरज नहीं निकला था और कुछ धुंध भी छाई हुई थी, इसलिए मैं उन लोगों को पहचान नहीं सका। मैंने एलीजा से कहा, "होंगे कोई। तुम्हें उनसे क्या लेना-देना ? तुम हमारा रास्ता छोड़ो !"

एलीजा ठहाका मारकर हंसा और बोला, "भला मुझे क्या लेना-देना ? मैं तो तुम लोगों की भलाई के लिए कह रहा था। जिन लोगों की छाया अभी ऊपर दिखाई दे रही थी, वे इस जहाज़ के मल्लाह नहीं। उनको कप्तान अहाब चोरी से ले जा रहा है। लेकिन खैर, जाओ! तुम्हारी तकदीर तुम्हारे साथ है।"

हम लोग भी अपना वक्त बरबाद नहीं करना चाहते थे, इस-लिए तुरन्त उससे अलग होकर जहाज़ पर जा पहुंचे। ऊपर जाने पर मुझे मालूम हुआ कि कप्तान अहाब पिछली रात को ही जहाज़ पर आ गए थे, लेकिन वे अभी तक अपने केबिन के भीतर ही थे। एक रस्से वाले से मैंने कप्तान के बारे में पूछा तो उसने बताया कि अभी कप्तान की तबीयत पूरी तरह ठीक नहीं हुई है और वह छोटे कप्तानों को छोड़कर और किसी से मिलना भी नहीं चाहता। तब तक पेलेग की गरजती हुई आवाज़ आई, "अरे आलसियो, तुम लोग क्या कर रहे हो ? जल्दी रस्से खींचो। कुछ लोग चर्खी पर पहुंच जाओ। लंगर खींचो। जल्दी करो। इस तरह ऊंघते हुए रस्से खींचोगे क्या ?"

जल्दी-जल्दी पटरे हटाए गए। घाट पर से सीढ़ी ऊपर खिस-काई गई। कुछ लोग मिलकर लंगर की चर्खी चलाने लगे। अन्त में लंगर उठाया गया। पाल फैला दिए गए और हमारा जहाज़ धीरे-धीरे घाट से दूर खिसकने लगा। शाम होते-होते हम खुले समुद्र में पहुंच गए। ठंडी हवा चलने लगी। वैसे भी यह क्रिस-मस का दिन था। समुद्र के जो छींटे जहाज़ के ऊपर आ रहे थे, वे बर्फ की तरह ठंडे थे। हमारा जहाज़ अब अटलांटिक महा-सागर में प्रवेश कर रहा था।

4

ननटुकेट छोड़ने के कई दिन बाद तक कप्तान अहाब डेक पर नहीं आए। दोनों छोटे कप्तान भी अपने-अपने काम में लगे रहते थे। मेट लोग नियमित रूप से पारी बदलते रहते थे और मस्तूल के पास पहरे देने वाले जहाज़ी भी बारी-बारी से बदलते रहते थे। जहाज़ चुपचाप आगे बढ़ा जा रहा था।

लेकिन कप्तान अहाब अब भी अपने केबिन में ही रहता था। हमने उसे अभी तक नहीं देखा था और हमें केबिन के भीतर जाने की आज्ञा नहीं थी। एक दिन दोपहर से पहले जब मैं डेक पर आया और मैंने अपनी नज़र ऊपर उठाई तो थोड़ी देर के लिए मैं चकित रह गया। कप्तान अहाब अपने क्वार्टर-डेक पर खड़ा था। देखने से ऐसा नहीं लगता था कि वह बीमार है या अभी बीमारी से उठा है। अपनी अधेड़ आयु के बावजूद वह इस तरह सीधा तनकर खड़ा था जैसे उसे कुछ न हुआ हो। डेक के आसपास लगे तख्तों के कारण मुझे उसका लंगड़ा पैर भी नहीं दिखाई दे रहा था। इतना शानदार और बहादुर दिखाई देने वाला आदमी मेरे जहाज़ का सबसे बड़ा कप्तान है—यह सोच-कर मुझे कुछ हिम्मत भी बंध रही थी और साथ ही कुछ डर भी लग रहा था। उस दिन के बाद से हर रोज़ सुबह वह दिखाई देने लगा। कभी वह भारी कदमों से डेक पर टहलता रहता था और कभी ह्वेल की हड्डी के स्टूल पर बैठा रहता था। उसकी नज़रें हमेशा समुद में दूर तक न मालूम क्या देखती रहती थीं।

जहाज़ अपनी यात्रा पर बढ़ता जा रहा था। लेकिन वह अभी असली काम में नहीं लगा था—और उसका असली काम था ह्वेल का शिकार।

कुछ दिन और बीते। अब हमारा जहाज़ ठंडे इलाके को काफी पीछे छोड़ आया था। मौसम अब बहुत अच्छा हो गया था और हमारा जहाज़ अब उष्ण कटिबन्ध की ओर बढ़ रहा था। कप्तान अहाब अब दिन के समय ही नहीं, रात में भी अकसर अपने डेक पर दिखाई दे जाता था। वह हमेशा टहलता ही रहता था। एक-दो बार मैंने उसे आधी रात के समय भी डेक पर चुपचाप खड़ा हुआ देखा। ऐसा लगता था जैसे उसे नींद ही नहीं आती। लेकिन रात के समय वह बहुत कम आवाज़ करता हुआ टहलता था। उसके लंगड़े पैर की जगह लगी ह्वेल मछली की हड्डी की टांग की खट्-खट् से मालूम हो जाता था कि इस समय कप्तान कहां है। एक रात स्टब नाम के एक बूढ़े मेट को नींद नहीं आ रही थी, इसलिए उसने बाहर आकर अहाब से कहा कि अगर आप टहलना ही चाहते हैं तो अपनी नकली टाँग के सिरे पर कुछ रस्सी लपेट लें, जिससे आवाज़ कम होगी। हम लोग यह सुनकर दंग रह गए, क्योंकि अहाब ऐसी बातों को बरदाश्त नहीं कर सकता। अहाब पहले तो बहुत गुर्राया और गालियां बकने लगा, लेकिन फिर वह शान्त हो गया और कुछ दुःखी आवाज़ में कहने लगा, "लेकिन मैं क्या करूं? मुझे भी तो नींद नहीं आती। तुम जानते हो, मेरे दिल में एक तूफान मंडरा रहा है। तुम्हें पता है कि मैं क्यों बेचैन हूं। लेकिन खैर, जाओ। तुम सो जाओ। मैं कोशिश करूंगा कि आवाज़ ज्यादा न हो।"

कप्तान इतनी उदासी की आवाज़ में बोल रहा था कि मुझे सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ। मुझे लगा कि सचमुच इसे कोई बहुत बड़ा दुःख है। यह शरीर से उतना रोगी नहीं, जितना मन से रोगी है। बाद में मुझे पता चला कि उस रात जब स्टब चला गया तो उसके बाद भी काफी देर तक अहाब अपनी डेक पर

खड़ा रहा। फिर उसने पहरे पर खड़े जहाज़ी को बुलाकर अपना हड्डी का स्टूल बाहर निकलवाया और काफी देर तक वह स्टूल पर बैठा अपना पाइप पीता रहा।

इस घटना के कुछ दिन बाद ही एक दिन सुबह के नाश्ते के बाद अहाब अपनी आदत के अनुसार केबिन से डेक पर आया और कुछ देर तक टहलता रहा। डेक के तख्तों पर उसके हड्डी के पैर की खट्-खट् सुनाई देती रही। कुछ देर बाद उसने स्टारबक नाम के दूसरे मेट को हुक्म दिया कि जहाज़ के सब लोगों को पीछे वाले डेक पर इकट्ठा करो।

धीरे-धीरे सब जहाज़ी जमा हो गए। सब लोग आपस में एक-दूसरे का मुंह देख रहे थे। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि बात क्या है। कुछ लोग आपस में फुसफुसाते हुए बातें कर रहे थे। अहाब चुपचाप अपने डेक पर खड़ा काफी देर तक समुद्र की ओर देखता रहा फिर उसने अपना टोप कुछ सीधा किया और जहाज़ियों की ओर मुड़कर बोला, "दोस्तो, तुम लोग जानते हो कि इस बार हम एक खास उद्देश्य से यात्रा कर रहे हैं। ह्वेल का शिकार तो हमें करना ही है, लेकिन इस बार हम एक खास ह्वेल की खोज में हैं और वह है- सफेद ह्वेल।" फिर उसने अपनी जेब से सोने का बड़ा सिक्का निकाला और उसे सब लोगों को दिखाते हुए बोला, "लोगो, यह सोलह डालर का सिक्का है। तुममें से जो कोई भी एक सफेद सिर वाली, झुर्रीदार भौंहों और टेढ़े जबड़ेवाली ह्वेल का पता सबसे पहले लगाएगा, उसे यह सोने का सिक्का इनाम में मिलेगा। उस सफेद सिर वाली विशालकाय ह्वेल की पीठ पर कुछ बर्छे और हारपून भी घुसे हुए दिखाई देंगे। इस ह्वेल ने कई समुद्रों पर अपना आतंक जमा रखा है। तुम सब लोगों ने इसके बारे में सुना होगा। अब तक इस ह्वेल को मारने की कई बार कोशिश हो चुकी है, लेकिन हर बार यह ह्वेल अच्छे से अच्छे शिकारियों को धोखा दे गई है। न मालूम कितनी नावों को वह उलट

चुकी है। कितने ही जहाज़ी उसे मारने की कोशिश में अपनी जान से हाथ धो बैठे हैं और ऐसे जहाज़ियों की तो गिनती ही नहीं है, जो उसकी मार से घायल हो चुके हैं और अपने हाथ-पैर तुड़वा चुके हैं। उस शैतान ह्वेल का नाम है—मोबी डिक! जब तक हम मोबी डिक को मार नहीं देंगे, तब तक हम चैन की सांस नहीं लेंगे।" फिर उसने एक हथौड़ी ली और सोने के उस सिक्के को जहाज़ के मुख्य मस्तूल पर जड़ दिया। जब वह फिर से अपनी जगह पर पहुंचा तो स्टारबक ने हिम्मत करके कहा, "कप्तान अहाब! मैंने मोबी डिक के बारे में सुना है। पर जिसने तुम्हारी टांग चबाई थी, वह मोबी डिक नहीं थी।"

"यह तुमसे किसने कहा?" अहाब चिल्लाया। फिर रुक कर बोला, "स्टारबक, वह मोबी डिक ही थी। उसी ने हमारी नाव पर हमला किया था और उसी ने मुझे यह मुर्दा खूंटा दिया है, जिस पर मैं जमा खड़ा हूं। मैं उसका पीछा करूंगा। सारी दुनिया के समुद्रों को छान मारूंगा और उसे मारकर ही दम लूंगा। जब तक वह सफेद ह्वेल काला खून नहीं उगलने लगेगी और अपने पंख ऊंचे करके पानी पर उलट नहीं जाएगी, तब तक मैं चैन नहीं लूंगा और मुझे उम्मीद है कि तुम सब लोग इस काम में मेरा साथ दोगे।"

स्टारबक अब चुप नहीं रह सका। वह बोला, कप्तान, तुम जानते हो कि मैं डरपोक नहीं हूं। ह्वेल का शिकार करते-करते मैं बूढ़ा हो आया हूं। मैं मौत के मुंह में भी छलांग लगा सकता हूं, लेकिन यह न भूलो कि मैं और ये दूसरे जहाज़ी भी—हम सब लोग ह्वेलों के शिकार के लिए आए हैं, किसी एक खास ह्वेल से बदला लेने के लिए नहीं। तुमने फिजूल ही मोबी डिक को अपना सबसे बड़ा दुश्मन मान लिया है। एक मोबी डिक को ही मारने से हमें क्या मिल जाएगा? अपने ननटुकेट के बाजार में तुम उसे कितने की बेच लोगे?"

अहाब कुछ देर तक चुप रहा। फिर गुर्राकर बोला, "नन-

टुकेट का बाज़ार ! लानत भेजो उस पर। क्या तुम समझते हो कि मैं मोबी डिक को इसलिए मारना चाहता हूं कि उसे बेचकर हमें कोई मुनाफा मिलेगा ? नहीं, वह तो मेरे लिए एक चुनौती है। हम सबके लिए चुनौती है। यह सफेद राक्षसी ह्वेल हर बहादुर जहाज़ी के लिए एक चुनौती है। देखो, स्टारबक, मैं यह बात गुस्से या बदले की भावना से नहीं कह रहा हूं, हालांकि मेरे मन में गुस्सा बहुत है और मैं मोबी डिक से बदला भी लेना चाहता हूं, लेकिन यह बात है कि अगर हम उसको नहीं मारेंगे, तो और कौन मारेगा ? पिछले दिनों बहुत सोच-विचार करने के बाद मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि वह शिकारी मैं ही हूं। उस ह्वेल की मौत मेरे हाथों ही लिखी है। तुम चाहे जो कुछ कहो, लेकिन मैं जानता हूं कि मन से तुम भी साथ देने के लिए तैयार हो। क्या ऐसा हो सकता है कि इस शानदार लड़ाई में तुम मेरा साथ छोड़ दो !"

स्टारबक धीरे से बुदबुदाया, "नहीं, अहाब, भला ऐसा कैसे हो सकता है। ईश्वर हम सबकी रक्षा करे !"

'शाबाश-शाबाश !" अहाब चिल्लाया। फिर उसने शराब से भरा हुआ बड़ा कटोरा उठाया और हारपूनियों की ओर घूमकर उन्हें अपने हथियार निकालने की आज्ञा दी। उन सबको उसने चर्खी के पास खड़ा किया। फिर उसने दोनों छोटे कप्तानों, तीनों मेटों और बाकी सब जहाज़ियों को थोड़ी-थोड़ी शराब प्रसाद के रूप में पीने के लिए दी। इसके बाद वह चर्खी की ओर बढ़ा। वहां उसने तीनों हारपूनियों के वर्छों को छुआ। उनके कन्धे थपथपाए और फिर उन्हें भी शराब पिलाई। फिर उसने चिल्लाकर कहा, "अब सब लोग कसम खाओ कि जब तक हम लोग मोबी डिक को खत्म नहीं कर लेंगे, तब तक चैन से नहीं बैठेंगे।"

5

मोबी डिक को मारने की कसम खाने वालों में मैं भी शरीक था। मैंने भी लोगों के साथ नारे लगाए और कप्तान अहाब के मन में मोबी डिक के खिलाफ जो शत्रुता की भावना थी, वैसी ही भावना अपने अन्दर भी भरी। अब कप्तान अहाब की लड़ाई मेरी अपनी लड़ाई भी थी। पहले कप्तान अहाब के मुंह से और फिर दूसरे साथी जहाज़ियों के मुंह से मैंने उस भयानक सफेद ह्वेल के बारे में बहुत-सी कहानियां सुनीं। पिछले एक लम्बे समय से ह्वेल के शिकारियों और दूसरे पेशेवर जहाजियों में मोबी डिक के बारे में तरह-तरह की बातें प्रचलित थीं। उसको देखा बहुत कम लोगों ने था, लेकिन लम्बे समुद्र की यात्रा पर जानेवाला हर आदमी यह जानता था कि ऐसी एक भयानक ह्वेल महासागरों में घूमती-फिरती है। वह आमतौर से किसी जहाज़ को छेड़ती नहीं है, लेकिन अगर उसका पीछा किया जाता है तो फिर वह डटकर मुकाबला करती है और हर बार जीत उसी की होती है। इसीलिए बहुत-से जहाज़ियों ने अंधविश्वास के कारण उसे अमर मान लिया है। लोग यह कहने लगे थे कि मोबी डिक वास्तव में कोई ह्वेल मछली नहीं, बल्कि कोई समुद्री दैत्य है, जो ह्वेल कीं शक्ल में महासागरों में तैरता रहता है। जिन जहाज़ियों को दूर से मोबी डिक को देखने का मौका मिला था, या जिन गिने-चुने लोगों ने उससे युद्ध किया था, उन्होंने बताया था कि मोबी डिक आमतौर से मिलने वाली स्पर्म ह्वेलों

की तुलना में बहुत बड़ी है। उसका माथा बहुत चौड़ा और बर्फ की तरह सफेद है और उस पर झुर्रियां पड़ी हुई हैं। पीछे उसके कूबड़ भी पिरामिड की तरह ऊंची उठी हुई है। वह अपनी नाक से बहुत ऊंची फुहार छोड़ती है। कभी तो वह गहरे पानी में शांत पड़ी रहती है और कभी आसपास के समुद्र को इस तरह मथ डालती है कि चारों तरफ झाग ही झाग फैल जाते हैं। पीछा किए जाने पर वह पहले तो चुपचाप भागने लगती है और फिर अचानक उलटकर शिकारियों पर वार कर बैठती है।

मुझे कप्तान अहाब के साथ हुई उसकी लड़ाई की कहानी भी मालूम हुई। एक बार कप्तान अपनी तीन नावों के साथ उस विचित्र ह्वेल का पीछा कर रहा था। उसने अपना जहाज़ बहुत दूर पीछे छोड़ दिया था और नावों से मोबी डिक को घेर लिया था। जब मोबी डिक पर हारपूनों और बर्छों की वर्षा हुई तो वह चिढ़ उठी और इतने ज़ोरों से छटपटाने लगी कि आसपास के समुद्र में एक तूफान-सा आ गया। नावें टूट गईं और जहाज़ियों को जान के लाले पड़ गए। ऐसे ही मौके पर अहाब को न जाने क्या सूझी कि वह अपना छह इंच लम्बा समुद्री छुरा लेकर चालीस हाथियों के बराबर बड़ी उस भयानक मछली पर टूट पड़ा। एक तरह से यह उसका पागलपन ही था क्योंकि मोबी डिक की तुलना में वह मक्खी से ज़्यादा बड़ा नहीं था। जब अहाब चीखता हुआ उसके पास पहुंचा तो उसने बड़ी आसानी से अपना नीचे का जबड़ा पानी के भीतर ही सरकाते हुए अहाब के नीचे पहुंचा दिया। अब अहाब एक तरह से उसके जबड़ों के बीच तैर रहा था। फिर धीरे से उसने एक बार अपना मुंह बन्द किया और खोल दिया और अहाब की एक टांग घुटने के नीचे से एकदम अलग हो गई। उस समय अहाब पर एक ऐसा पागलपन सवार था कि टांग कट जाने पर भी वह चीखता-चिल्लाता रहा। उसने अपना छुरा फेंककर मोबी डिक पर वार किया। छुरा मोबी डिक के कंधे के पास घुस गया। उसने एक बार घूमकर

अहाब को देखा और फिर अपनी पूंछ की एक भयानक थपेड़ से उसको उछालकर पानी में कई गज दूर फेंक दिया। वहां अहाब के साथियों ने उसे खींचकर नाव में चढ़ाया और किसी तरह वापस उसे जहाज पर ले आए।

जहाज पर भी कप्तान अहाब छटपटाता रहा और अपनी कटी हुई टांग के बावजूद उठकर भागने की कोशिश करता रहा। अन्त में लोगों ने उसे उसकी चारपाई पर बांध दिया और उसकी टांग का इलाज करने लगे। कई दिनों तक खून बहता रहा और कप्तान बुखार में बेहोश पड़ा बड़बड़ाता रहा। बन्दरगाह वापस लौटकर उसे घर पहुंचा दिया गया। कटी हुई टांग की जगह ह्वेल की हड्डी का खूंटा लगाकर चलने फिरने लायक बनने में अहाब को काफी दिन लग गए। इन्हीं दिनों में उसने प्रण किया कि मोबी डिक को ज़रूर मारेगा। अब उसकी पहली यात्रा ही मोबी डिक से बदला लेने की यात्रा होगी। हालांकि वह जानता था कि अगर वह खुलेआम यह बात कहेगा तो जहाज़ के मालिक लोग इस काम के लिए उसे जहाज़ नहीं देंगे और उसके साथी जहाज़ी भी उसकी सहायता करने से इन्कार कर देंगे। इसलिए कप्तान अहाब चुपचाप तैयारियां करता रहा। वह किसी न किसी बहाने उन सारी चीज़ों को जहाज़ पर जमा करवाता रहा, जिनकी मोबी डिक के खिलाफ लड़ाई में उसे ज़रूरत पड़ सकती थी। इसी के लिए उसने चोरी के छह-सात बहुत खूंखार ह्वेल शिकारियों को भी अपने खर्चे पर जहाज़ में भर्ती किया था और उन्हें चुपके से जहाज़ में पहुंचा दिया था।

उस दिन जहाज़ियों को मोबी डिक के खिलाफ लड़ने की कसम दिलाने के बाद अहाब शाम से ही अपने केबिन में जा घुसा। उसने केबिन की छत से लटकते हुए लालटेन को जलाया और फिर लकड़ी के एक बड़े-से सन्दूक में से नक्शे और चार्टों के गोल लपेटे हुए रोल अपनी टेबल पर जमा कर लिए। एक नक्शा फैलाकर वह उस पर पेंसिल से निशान बनाने लगा। बीच-बीच

में वह उन पुरानी डायरियों, लॉग-बुकों और रजिस्टरों को देखता जाता था, जिनमें पिछली यात्राओं के दौरान यह दर्ज किया गया था कि संसार के किन-किन भागों के समुद्रों में और किन-किन मौसमों में कहां-कहां स्पर्म जाति की ह्वेलें पकड़ी गई थीं या देखी गई थीं।

धीरे-धीरे रात बीतती गई। अहाब नक्शों पर झुका अपने काम में लगा रहा। वह पेंसिल के पुराने निशानों को मिटाता था और उनकी जगह नई रेखाएं खींचता चला जाता था। कहीं वह लाल निशान लगाता तो कहीं नीले और फिर अपना पाइप सुलगाकर थोड़ी देर तक नक्शों पर विचार करता था और अचानक फिर कोई पुरानी लॉग-बुक खोलकर उसके पन्ने उलटने लगता था। दुनिया के चार बड़े महासागरों के नक्शे उसके सामने फैले हुए थे। उन पर वह अपने जहाज का रास्ता निश्चित कर रहा था।

अब हर रोज़ दिन में और रात में भी काफी देर तक अहाब नक्शों में ही डूबा रहता था। संसार के विशाल महासागरों में उसे अब सिर्फ एक मछली का पीछा करना था। उसने पता लगा लिया था कि स्पर्म ह्वेलें कहां-कहां मिलती हैं और वह समुद्री काई कहां-कहां पाई जाती है, जो ह्वेलों का मुख्य भोजन होती है। वह मोबी डिक की खोज में इन सभी इलाकों को छान मारना चाहता था।

अहाब ने हमारे जहाज की यात्रा की योजना ही इस तरह बनाई थी कि साल-भर वह अटलांटिक महासागर में और उसके बाद अरब सागर में ह्वेल के शिकार के बहाने मोबी डिक को खोजता रहेगा और उसके बाद ठीक समय पर हिन्द महासागर में उस जगह पहुंच जाएगा, जिस जगह उसे मोबी डिक के निश्चित रूप से मिलने की आशा थी। धीरे-धीरे महीने गुजरते गए।

एक दिन की बात है कि दोपहर का समय था। आसमान में

हल्के-हल्के बादल छाए हुए थे। हमारे जहाज़ के जहाजी अपने अपने काम में लगे हुए थे या रेलिंग के पास खड़े समुद्र को देख रहे थे और गप्पें लड़ा रहे थे। मैं कीकेग के पास बैठा एक चटाई बुनने में उसकी मदद कर रहा था। तभी मैं अपने सिर के ऊपर बादलों में से आई एक चीख को सुनकर चौंक पड़ा। रस्सियों का गोला मेरे हाथ से छूट गया। मैंने देखा कि मस्तूल के आड़े डंडों के बीच तैश्तेगो नाम एक नीग्रो जहाजी पहरे पर खड़ा था और अपने हाथ फैलाकर उंगली से बार-बार एक तरफ इशारा करता हुआ चीख रहा था। वह इतनी ऊंचाई पर था कि उसकी आवाज को साफ-साफ समझने में कुछ देर लगी। वह कह रहा था—"वहां, वह पानी उछाल रही है। वहां, वहां, वहां! अरे, वे तो बहुत-सी ह्वेलें हैं!"

"कहां? कितनी दूर?"

"उधर लट्ठे की ओर करीब दो मील दूर वह देखो। वह एक ह्वेल फुहार छोड़ रही है!"

तुरन्त ही दौड़-धूप आरम्भ हो गई। स्पर्म ह्वेल घड़ी की टिक्-टिक् की तरह ठीक समय पर बार-बार फुहार छोड़ती है, इसीलिए शिकारी दूर से उसको पहचान लेते हैं। इसी बीच तैश्तेगो की आवाज फिर सुनाई दी, "लो, वे सबकी सब डुबकी लगा गईं!"

अब अहाब भी अपने डेक पर निकल आया था। उसने अपने सहायक को लॉग-बुक में समय नोट करने का हुक्म दिया, "लड़के, टाइम देखो! जल्दी से टाइम नोट करो!"

जहाज़ को फौरन हवा के रुख से अलग किया गया। अब वह धीरे-धीरे उस ओर सरकने लगा, जहां ह्वेलें देखी गई थीं। एक मल्लाह को जहाज़ की रखवाली करने के लिए चुना गया। वह फौरन लपककर मुख्य मस्तूल पर चढ़ गया और तैश्तेगो नीचे उतर आया। दूसरे दो मस्तूलों के पहरेदार भी नीचे उतर आए। रस्सियों की रीलें नावों में लगा दी गईं। क्रेनें बाहर को

निकाल दी गई। मुख्य मस्तूल का निचला लट्ठा पीछे हटाया गया और तीन नावें समुद्र के ऊपर लटक गईं। सभी मल्लाह बाड़ के बाहर एक हाथ से छड़ को पकड़े हुए नीचे नावों में कूदने के लिए तैयार हो गए और अहाब का हुक्म पाते ही नावों में कूद पड़े। इसी बीच सबने देखा कि ऊपर वाले डेक से वह खास नाव भी नीचे उतार दी गई, जो सिर्फ कप्तान के लिए सुरक्षित रहती थी। कप्तान अहाब अपनी खूंटेदार टांग के सहारे उस नाव में सबसे आगे खड़ा था और उसके वे रहस्यमय जहाज़ी चीखते हुए बड़ी तेज़ी से चप्पू चला रहे थे। दूसरी नावों के जहाज़ी आश्चर्य से इन अपरिचित लोगों की ओर देख रहे थे। वे लोग रुई की काली चीनी जाकटें पहने थे और उन सबके पाजामे काफी चौड़े थे। उनमें से एक ने अपने सिर पर सफेद पगड़ी बांध रखी थी। अहाब ने कड़ककर उसे कहा, "फिदाउल्ला, नाव को बीच में से आगे निकालो।"

फिदाउल्ला ने मुस्तैदी से जवाब दिया, "ठीक है साहब!" देखते-देखते उनकी नाव पेलेग, बिल्दाद और स्टारबक की नावों के आगे निकल गई। हमारी नाव के जहाज़ी आपस में फुसफुसाने लगे, "कप्तान इन भेड़ियों को कहां से ले आया! देखने में सब मनीला द्वीप के आदिवासी मालूम होते हैं। सभी का रंग पीला है और सबके सिर पर जैसे अहाब के पागलपन का भूत मंडरा रहा है।

मेरे पास वाली नाव के ऊपर से स्टब ने आवाज़ लगाकर कहा, "देखो स्टारबक! अहाब ने चुपके-चुपके कैसी तैयारी कर रखी थी। मुझे तो पहले ही शक था। वह इन लोगों को नीचे गोदाम में छिपाकर रखता था। इसलिए वह अकसर गोदाम के आसपास घूमता रहता था। बड़ी गलत बात है।"

स्टारबक ने अपनी पतवार को संभालते हुए कहा, "गलत तो है ही, लेकिन अब क्या किया जा सकता है? इस यात्रा में तो हमें मोबी डिक का ही पीछा करना है और मोबी डिक के मुका-

बले में मेरे ख्याल से ये नये लोग कुछ बुरे नहीं हैं। देखो न, वह फिदाउल्ला कैसा तेंदुए की तरह निशाना साधकर बैठा है!" फिर उसने अपने मल्लाहों को आवाज़ लगाई, "ज़ोर लगाओ, और ज़ोर लगाओ! देखो, अहाब की नाव आगे बढ़ गई। हमें बाईं तरफ से ह्वेल को घेरना है।"

अचानक अगली नाव पर से अहाब ने हाथ का इशारा किया। सभी नावों के जहाज़ियों ने अपने-अपने चप्पू पानी में से बाहर उठा लिए। नावें अब धीरे-धीरे उस जगह की ओर बढ़ रही थीं, जहां ह्वेलों ने डुबकी लगाई थी। कोई भी किसी तरह की आवाज़ नहीं कर रहा था, देखते-देखते एक ह्वेल का बड़ा-सा माथा पानी में से उठा। उसे देखते ही स्टारबक ने कीकेग की ओर इशारा करते हुए कहा, "खड़े हो जाओ!" कीकेग हारपून हाथ में लिए उछलकर खड़ा हो गया। सब लोग दम साधकर इन्तज़ार करने लगे। कीकेग का हारपून सनसनाता हुआ हवा में उड़ा और ह्वेल की पीठ में घुस गया। ह्वेल ने जोर से फुफकार-कर बहुत-सा पानी उड़ा दिया। उसकी नाक से उड़ी हुई फुहार के गर्म छींटे वर्षा की तरह हमारी नाव पर आ गिरे। इतने में जोर के धक्के से हमारी नाव का पाल फट गया और मस्तूल का लट्ठा कड़कड़ाकर टूट गया। ह्वेल के छटपटाने से पानी में ऊंची-ऊंची लहरें उठने लगीं। पता नहीं कैसे, ह्वेल ने अपनी पूंछ के धक्के से हमारी नाव को बुरी तरह झकझोर दिया। दूसरी नावों से उस पर हारपूनों और बर्छों की वर्षा होने लगी। बाकी नावों का क्या हुआ, मुझे पता नहीं, लेकिन हमारी नाव तो तीसरे धक्के में ही टूटकर लगभग डूब गई। ह्वेल तब तक न मालूम कहां गायब हो चुकी थी। जब पानी कुछ शांत हुआ तो हम लोग इधर-उधर से तैरते हुए अपनी डूबती हुई नाव के पास पहुंचे। किसी तरह हमने उसे सीधा किया और तैर-तैरकर इधर-उधर से चप्पू इकट्ठे किए। नाव में घुटनों-घुटनों तक पानी भर गया था। अब तेज हवा चलने लगी थी और अंधेरा भी छाने लगा

था। दूर तक हमें जहाज़ का कोई निशान नहीं दिखाई दे रहा था। समुद्र उमड़ रहा था, इसलिए नाव में से पानी उलीचने की कोशिश करना बेकार था। चप्पू भी अब नाव को चलाने में सहायता नहीं दे सकते थे। स्टारबक किसी तरह वाटरप्रूफ दियासलाई के बक्से को काटकर अन्त में लालटेन जलाने में सफल हुआ। उसने उसे एक डंडे में बांधकर कीकेग को पकड़ा दिया।

उधर हम लोग गीले, बिलकुल भीगे बैठे थे और अपने पैरों और हाथों से पानी काटकर नाव को आगे बढ़ा रहे थे। सुबह जब पौ फटी तो धुंध अब भी समुद्र पर छाई हुई थी। थोड़ी देर बाद अचानक धुंध में से एक विशाल आकृति-सी दिखाई दी और हमने देखा कि हमारा जहाज़ सीधा हमारी ओर झपटता हुआ हमारे सिर आ रहा है। हम सब नाव छोड़कर समुद्र में कूद पड़े। दूसरे ही क्षण जहाज़ नाव के ऊपर से निकल गया और नाव उलटती-पलटती जहाज़ के पीछे डूबती दिखाई दी। हमने तैर-कर उसे पकड़ा और फिर किसी तरह उसे खींचकर जहाज़ के पास तक लाए। अन्त में जहाज़ पर पहुंचने से हमें मालूम हुआ कि दूसरी नावें ह्वेलों से अलग होकर समय रहते ही जहाज़ पर लौट आई थीं। हमारे बारे में कप्तान ने यह समझ लिया था कि शायद हम सभी डूब गए हैं। रात-भर अंधेरे में हमारा इन्तज़ार करने के बाद अब जहाज़ आगे बढ़ने की तैयारी कर रहा था भाग्य से हम अचानक उसे मिल गए थे।

6

धीरे-धीरे दिन बीते, सप्ताह बीते और हम आराम से चलते रहे। हमारे सफेद रंग के जहाज़ पिकोड ने एक-एक करके कई ह्वेल-क्षेत्र पार किए। अब हम अटलांटिक के दूसरे किनारे सैण्ट हेलेना के दक्षिण में पहुंच चुके थे और मूंगे के द्वीपों के पास से गुज़र रहे थे। मौसम साफ था। रात का समय था। चांदनी खिली हुई थी। फिदाउल्ला मुख्य मस्तूल के ऊपर चढ़ा पहरा दे रहा था। अचानक उसने आवाज लगाई—"वह देखो, वह वहां पानी उड़ा रही है। यह सफेद ह्वेल है! मोबी डिक, मोबी डिक!"

जहाज़ में तहलका मच गया। लोग अपने-अपने बिस्तर छोड़कर डेकों पर निकल आए। फिदाउल्ला जिस तरफ इशारे कर रहा था, उधर हमने सामने की ओर सफेद बुलबुलों से आगे चांदनी रात में चांद की तरह चमकती हुई एक ऊंची फुहार देखी। सभी जहाज़ी मोबी डिक का पीछा करने के लिए उतावले हो गए। अहाब भी लंगड़ाता हुआ डेक पर आ गया था। उसने पालों को ठीक करने का हुक्म दिया और हमारा जहाज़ तेजी से हवा के सामने बढ़ा। लेकिन फिर उस रात वह फुहार दिखाई नहीं दी। कुछ दिन बाद आधी रात के समय पहरेदार ने फिर उसी फुहार की खबर दी। इस बार भी सभी जहाज़ियों ने उसे देखा, लेकिन जब तक उसके पास पहुंचने के लिए पाल फैलाए गए, तब तक वह पहले की तरह ही फिर गायब हो गई। यह

घटना हमारे साथ कई रातों तक हुई।

अन्त में जब हम पूर्व की ओर घूमे तो हवाएं तेज हो गईं और समुद्री तूफान में हमारा जहाज़ कई दिनों तक फंसा रहा। हमारे जहाज़ के आगे पानी में तरह-तरह के जीव नज़र आने लगे। हमारे पीछे विचित्र प्रकार के कौओं के दल उड़ने लगे। हमारे बहुत चिल्लाने पर भी ये अजीब-से पक्षी रस्सियों से चिपके रहते थे। हम गुडहोप अन्तरीप से आगे बढ़ रहे थे।

एक बार आधी रात के बाद स्टारबक अहाब के केबिन में गया तो उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि कप्तान फर्श में जड़ी हुई अपनी कुर्सी पर सीधा बैठा था। उसकी आंखें बन्द थीं। वर्षा और तूफान के अध-पिघले ओले, जिनमें से वह अभी कुछ देर पहले आया था, अब भी धीरे-धीरे उसके टोप और कोट से टपक रहे थे। उसके सामने मेज़ पर ज्वारों और समुद्री धाराओं के चार्ट खुले पड़े थे। एक नक्शे पर नीली पेंसिल का नक्शा तीर की तरह सीधा खींचा हुआ था। स्टारबक चुपचाप उसके केबिन से बाहर चला आया। गुडहोप अन्तरीप से आगे दक्षिण-पूर्व की ओर बढ़ने पर एक दिन हमें सामने से आता हुआ एक जहाज़ मिला। दोनों जहाज़ों ने अपनी रफ्तार कम की और जब वह जहाज़ हमारे पास आ गया तो कप्तान अहाब ने अपना भोंपू मुंह के आगे लगाकर उस जहाज़ के कप्तान से पूछा, "क्यों कप्तान! क्या तुमने रास्ते में सफेद ह्वेल देखी है?"

जब उधर वाला कप्तान भोंपू मुंह के आगे लगाकर जवाब देने लगा तो पता नहीं कैसे भोंपू उसके हाथ से छूटकर समुद्र में जा पड़ा। हवा अब तेज़ हो गई थी। भोंपू के बिना वह बहुत चिल्लाया, लेकिन उसकी आवाज़ हम तक नहीं पहुंच सकी। परन्तु उसके इशारों से हमें इतना मालूम हुआ कि उसने ऐसी कोई ह्वेल अब तक नहीं देखी थी। देखने से ऐसा लगता था कि वह जहाज़ ननटुकेट का ही था और वापस लौट रहा था। अहाब ने फिर अपने भोंपू में से आवाज़ लगाई, "सुनो कप्तान!

यह 'पिकोड' है। हम दुनिया का चक्कर लगाने जा रहे हैं। तुम ननटुकेट में लोगों से कहना कि हमारी चिट्ठियां अब प्रशान्त महासागर के बन्दरगाहों में भेजें। अगर दो साल बाद मैं घर नहीं पहुंचा तो उनसे कहना कि वे चिट्ठियों को पानी में..."

दूसरा जहाज़ अब काफी आगे बढ़ चुका था और उसका कप्तान हाथ हिलाकर हमसे विदा ले रहा था। मैंने मन में कहा—'तो हमारा जहाज़ अब मोबी डिक की खोज में दुनिया का चक्कर लगाएगा। यह अहाब हमें चैन नहीं लेने देगा।'

अगला दिन बहुत शांत, लेकिन गर्म था। गरम समुद्री हवाओं के कारण दम घुटा जा रहा था। यह हिन्द महासागर का वह भाग था जहां आमतौर से ह्वेल मछलियां नहीं दिखाई देती थीं। मुख्य मस्तूल पर बैठने की आज मेरी बारी थी। मैं ऊपर तख्तों पर पैर फंसाए एक मोटे रस्से का सहारा लेकर आराम से बैठा इधर-उधर झूम रहा था। मैंने देखा कि दूसरे मस्तूलों पर बैठे जहाज़ियों में से एक तो बहुत देर से ऊंघ रहा था। आलस्य के कारण मेरी पलकें भी भारी हो रही थीं। इतने में अचानक चौंककर मैं सीधा तन गया। मैंने देखा, सामने दाहिनी ओर काफी दूर एक बड़ी-सी स्पर्म ह्वेल किसी उल्टे जहाज़ की तरह पानी पर लेटी हुई थी। उसकी ऊंची काली चमकदार पीठ धूप में झिलमिला रही थी। रह-रहकर वह अंगड़ाई-सी लेती हुई इधर-उधर पलट जाती थी और खूब ऊंची फुहार उड़ा रही थी। मैंने फौरन चिल्लाकर इसकी खबर दी। जहाज़ पर भगदड़ शुरू हो गई। अहाब ने नावें उतारने का हुक्म दिया और थोड़ी ही देर में हम लोग ह्वेल के पास जा पहुंचे। अहाब ने हुक्म दिया कि एक भी बड़ा चप्पू इस्तेमाल न किया जाए और लोग फुस-फुसाकर ही बात करें। लेकिन इतने पर भी शायद ह्वेल को हमारे आने का पता चल गया था। उसने अपनी पूंछ हवा में चालीस फुट ऊंची उठाई और फिर अजीब-सी गड़-गड़ की आवाज़ करती हुई वह देखते-देखते पानी में डुबकी लगा गई। जिस जगह वह

गायब हुई, वहां पानी बड़े-बड़े बुलबुलों में उबलता हुआ-सा नज़र आया। फिर एक बड़ा भारी भंवर-सा दिखाई दिया और फिर ऊंची-ऊंची लहरें थपेड़े मारने लगीं, जैसे कोई विशालकाय जहाज़ एकदम गोता मारकर पानी में घुस गया हो। "वह गई!" लोग चिल्लाए। स्टब आराम से अपनी नाव में बैठकर अपना पाइप सुलगाने लगा था, लेकिन उसे सुस्ताने का मौका नहीं मिला। उसने अभी दियासलाई जलाई ही थी कि ह्वेल ठीक उसकी नाव के सामने बाहर निकल आई। स्टब ने फौरन अपना पाइप कमर में खोंसा और ह्वेल के मुकाबले के लिए तैयार हो गया। दूसरी नावों पर भी हारपून और बर्छे चमकने लगे। जहाज़ी चिल्ला-चिल्लाकर एक दूसरे की हिम्मत बढ़ाने लगे और कप्तान अहाब की आवाज गरजने लगी। स्टब की नाव पर से तैश्तेगो ने अपना हारपून फेंका, जो सीधा ह्वेल के सिर में घुस गया। ह्वेल तेज़ी से रस्सी को खींचने लगी और पलटकर उसको अपने आसपास लपेटने लगी। स्टब इसके लिए पहले से ही तैयार था। वह चिल्लाया, "रस्सी ढीली करो? बचो-बचो, रस्सी से बचो?" रस्सी दनदनाती हुई नाव में से निकलती चली जा रही थी। हारपून में बंधी हुई यह रस्सी भी अपने-आप में बड़ी भयानक होती है। अगर कोई आदमी गलती से इसकी पकड़ में आ जाए तो होगा यह कि या तो उसके हाथ-पैर कट जाएंगे या वह रस्सी के साथ घिसटता हुआ कई गज दूर चला जाएगा। सन की इस मज़बूत रस्सी को अलकतरा पोतकर पक्का बनाया जाता है। इसे आसानी से खुलने वाली गुच्छियों में लपेटकर लकड़ी के बड़े-बड़े टबों में हमेशा तैयार रखा जाता है। कभी-कभी इसे नाव के काफी बड़े भाग में फैला लिया जाता है।

"खींचो-खींचो!" स्टब ने आगे वाले जहाज़ी से कहा। लेकिन अब नाव को ह्वेल खींच रही थी। थोड़ी ही देर में हम उसके पास पहुंच गए। स्टब ने भागती हुई ह्वेल पर बर्छों से बार-बार वार किया। हमारी नाव कभी ह्वेल की भयंकर लपेट

से बचने के लिए पीछे रह जाती थी, तो कभी फिर दूसरा वार करने के लिए उसकी बगल में पहुंच जाती थी।

ह्वेल बुरी तरह घायल हो गई थी। उसके शरीर से खून इस तरह बह रहा था, जैसे किसी पहाड़ी के ऊपर से नाला बह रहा हो। कई फर्लांग तक पानी का रंग गुलाबी हो गया था। वह फुफकारकर बहुत ऊंची-ऊंची फुहार छोड़ रही थी। उसके नथुने झटके के साथ फैल और सिकुड़ रहे थे और उसकी बगलें लगातार फैल और पिचक रही थीं। काफी देर तक लड़ाई के बाद उसने दम तोड़ दिया।

हम जहाज़ से काफी दूर आ गए थे। कप्तान अहाब ह्वेल को खींचकर लाने का हुक्म देकर जहाज़ पर वापस लौट गया। मैंने देखा कि इतनी बड़ी ह्वेल का शिकार करके सभी जहाजी बड़े खुश नज़र आ रहे थे और चीख-चीखकर नावों में उछल-कूद मचा रहे थे, लेकिन अहाब उसी तरह गम्भीर बना हुआ था। ज़ाहिर था कि एक मामूली ह्वेल को मारकर उसे कोई खुशी नहीं हो रही थी।

हमने तीनों नावों को पास-पास जोड़कर एक गाड़ी-सी बनाई और ह्वेल को जहाज़ की ओर खींचना शुरू किया। हम कुल 18 आदमी लगातार चप्पू चला रहे थे। लेकिन घण्टों की कोशिश के बाद भी ऐसा जान पड़ता था कि वह अपनी जगह से बिलकुल नहीं हिल रही है। ह्वेल को मारने से भी ज़्यादा मेहनत उसको खींचने में पड़ रही थी। अंधेरा घना होता जा रहा था। जहाज़ की रस्सियों में बंधी हुई तीन लालटेनें हमें रास्ता दिखा रही थीं। जब हम पास पहुंचे तो कप्तान अहाब ने कुछ और लाल-टेनें नीचे लटकाने की आज्ञा दी। जब हम लोग मरी हुई ह्वेल को जहाज़ के किनारे बांधने लगे तो कुछ देर तक वह चुपचाप खड़ा देखता रहा और इसके बाद फिर अपने केबिन में चला गया। हमने ह्वेल का सिर पीछे की ओर और मुंह आगे की ओर करके बांध दिया। ह्वेल इतनी बड़ी थी कि दूर से देखने

में हमारे जहाज़ के बगल में एक छोटे जहाज़ की तरह लग रही थी। स्टब सबसे खुश था, क्योंकि इस ह्वेल को मुख्य रूप से उसी ने मारा था। वह अपने एक सहायक से कह रहा था, "देगू, तुम नीचे जाओ और उसकी पूंछ में से थोड़ा-सा मांस काटकर लाओ। मैं रसोइये से इसका कबाब आज ही बनवाकर खाऊंगा।"

लगभग आधी रात के समय मांस का टुकड़ा काटा गया और भूना गया। स्टब और उसके साथियों ने एक छोटी-सी दावत उड़ाई। काफी देर तक हम लोग हंसी-मज़ाक करते रहे और इसके बाद सोने चले गए। नीचे अब ह्वेल की लाश के आस-पास सैकड़ों शार्क मछलियां इकट्ठी हो गई थीं और उसके शरीर से मांस नोंच-नोंचकर खा रही थीं। अन्त में यह तय किया गया कि अगर ह्वेल को अभी ही काटकर ऊपर नहीं लाया गया तो रातभर में शार्क मछलियां उसे नष्ट कर देंगी। इसलिए कीकेग और उसके साथ एक-दो और मल्लाहों को नीचे उतारा गया। उनके हाथ में लम्बे-लम्बे नुकीले बेलचे दे दिए गए। उन्होंने बेलचे चला-चलाकर शार्कों को मारना शुरू किया। कुछ लोग ह्वेल को काटकर उसके ऐसे टुकड़े करने लगे, जिन्हें आसानी से जहाज़ पर चढ़ाया जा सकता था।

कीकेग ने कई शार्क मछलियों को मारा। उनमें से कुछ को उनकी खाल के लिए डेक पर लाया गया। वैसे तो सभी मछ-लियां मर चुकी थीं, लेकिन कीकेग जब एक मरी हुई शार्क मछली का जबड़ा बन्द करने लगा तो पता नहीं वह कैसे ऐसी भड़की कि उसने कीकेग का हाथ ही लगभग काट लिया। कीकेग दर्द के मारे चिल्ला उठा और अपना हाथ झुलाता हुआ वहां से हट गया। बाद में एक दूसरे मल्लाह ने उस मछली को मार दिया। आज काफी काम हो गया था। सभी मल्लाह बड़े खुश थे।

7

कुछ आगे चलने पर हमें रास्ते में एक जर्मन ह्वेल शिकारी जहाज़ लौटता हुआ मिला। उसका नाम था 'युंगफ्राऊ'। कप्तान अहाब ने अपने डेक पर आकर 'युंगफ्राऊ' के कप्तान को सलाम किया और उससे हाल-चाल पूछने के बाद तुरन्त यह पूछ लिया कि क्या उसने रास्ते में कोई सफेद ह्वेल मछली देखी है।

'युंगफ्राऊ' का कप्तान हाथ में एक छोटा-सा डंडा और एक कनस्तर लिए खड़ा था। वह बोला, "नहीं, हमने ऐसी कोई ह्वेल नहीं देखी। लेकिन हमारे जहाज़ में दिया जलाने का तेल खत्म हो गया है। कई दिनों से बड़ी परेशानी हो रही है। मुझे अपने केबिन में अंधेरे में ही बैठना पड़ता है। क्या आप थोड़ा-सा तेल दे सकेंगे?" यह कहकर उसने अपना कनस्तर दिखा दिया।

कप्तान अहाब को भला इसमें क्या आपत्ति हो सकती थी। वह तुरन्त तेल देने के लिए राज़ी हो गया। 'युंगफ्राऊ' पर से एक नाव जल्दी से पानी पर उतारी गई और उसका कप्तान खुद उसमें बैठकर हमारे जहाज़ के पास आ गया। कप्तान अहाब ने तेल का एक पीपा नीचे लटकाने का हुक्म दिया। तेल लेकर 'युंगफ्राऊ' का कप्तान अपने जहाज़ की ओर लौटने लगा। वह अभी बीच रास्ते में ही था कि इतने में थोड़ी दूर पर कुछ ह्वेलें दिखाई देने लगीं। दोनों जहाज़ों के मस्तूलों पर खड़े पहरेदारों ने लगभग साथ ही साथ आवाज़ लगाकर इसकी

सूचना दी। देखते-देखते हमारे जहाज़ पर से स्टारबक, स्टब और फ्लास्क अपनी-अपनी नावें लेकर समुद्र में उतर गए। 'युंगफ्राऊ' के कप्तान ने भी अपनी नाव ह्वेलों की ओर मोड़ ली और उसके जहाज़ पर से दो और नावें नीचे उतरकर उसके पीछे हो लीं। अब ह्वेलों तक पहुंचने के लिए दोनों जहाज़ों की नावों में एक तरह की दौड़-सी आरम्भ हो गई।

हम लोग अपनी नावों को आगे बढ़ाने की भरसक कोशिश कर रहे थे, लेकिन 'युंगफ्राऊ' के मल्लाह भी कम नहीं थे। वे हमें आगे निकलने का कोई मौका ही नहीं दे रहे थे। स्टारबक और फ्लास्क को भी जोश आ रहा था। सबकी नजरें ह्वेलों पर टिकी हुई थीं। थोड़ी ही देर में हमारी दो नावें 'युंगफ्राऊ' की नावों के बराबर पहुंच गईं और उनसे आगे बढ़ने की जी-तोड़ कोशिश करने लगीं। अचानक 'युंगफ्राऊ' के कप्तान की नाव के एक चप्पू पर एक बड़ा-सा केकड़ा चिपक गया। जब तक वे लोग केकड़े को छुड़ाने की कोशिश करते रहे, हम लोग उनसे दो हाथ आगे निकल गए। देखते-देखते हमारे हारपूनिये उछल-कर खड़े हो गए और उन्होंने निशाना साधकर एक ह्वेल पर अपना हारपून फेंक दिया। जर्मन कप्तान अब एक तरह से अपनी हार मान चुका था। उसने अपनी नावों को लौटने का इशारा कर दिया और इधर हम उस ह्वेल से जूझने लगे। यह बहुत बड़ी मछली थी और अपने भागते हुए साथियों से पीछे रह गई थी। हमने अब घेरकर इस पर वार करने शुरू किए। हमारी तीनों नावों पर से डोरियों में बंधे हुए हारपून उसकी पीठ में घुस चुके थे। मछली ज़ोर-ज़ोर से छटपटा रही थी और पचास-पचास फुट ऊपर तक पानी के छींटे उड़ा रही थी। वह बार-बार गोते लगाती थी और फिर ऊपर निकलकर ज़ोर से फुहार छोड़ती थी। यह राइट ह्वेल जाति की मछली थी। इसमें और स्पर्म ह्वेल में यह अन्तर होता है कि इसकी फुहार ऊपर जाकर दो धाराओं में बंट जाती है। जब वह पानी में

गोता लगाती थी तो हमारी पूरी की पूरी रस्सियां पानी में डूब जाती थीं और हमारी नावें खिंचकर पीछे से बहुत ऊंची उठ जाती थीं। जब वह ऊपर आती थी तो हम उस पर बर्छे फेंकने लगते थे। कई घंटों की लड़ाई के बाद अन्त में उसने दम तोड़ दिया। मरने के बाद अब अगर वह डूबती तो उसे ढूंढ़ना मुश्किल हो जाता, इसलिए हमने उसे रस्सों में बांधकर खींचना शुरू कर दिया। खुशी से चिल्लाते हम शाम तक उसे खींचकर अपने जहाज के पास ले आए। कप्तान अहाब हाथ में एक लालटेन लिए अपने डेक पर खड़ा हमारा इन्तज़ार कर रहा था। इस ह्वेल को भी हमने जहाज़ की बगल में बांध दिया। लेकिन यह मछली इतनी बड़ी और भारी थी कि हमारा जहाज एक तरफ से पानी की ओर झुक गया। मजबूर होकर कप्तान अहाब के हुक्म पर उस ह्वेल को समुद्र में फेंक देना पड़ा और हमारा जहाज़ आगे बढ़ा।

धीरे-धीरे हमारा जहाज़ बर्मा के मलक्का द्वीप के दक्षिण में जा पहुंचा। यह एशिया का सबसे दक्षिणी सिरा है जो समुद्र में काफी आगे तक निकला हुआ है। इसके पास से ही सुमात्रा, जावा, बाली और तिमोर द्वीपों का सिलसिला शुरू हो जाता है। मलक्का और सुंडा के जलडमरूमध्यों को पार करके जहाज़ चीन सागर में पहुंचते हैं।

मौसम अच्छा था और हवा भी सीधी बह रही थी। कप्तान अहाब हमारे जहाज़ को जावा के पास समुद्र में से निकालकर चीन सागर में ले आया था। वहां से वह सीधा प्रशान्त महासागर में फिलिपाइन द्वीप-समूह से आगे और जापान के समुद्री किनारे से काफी कटकर उस जगह पहुंचना चाहता था, जहां उसे मोबी डिक के मिलने की उम्मीद थी। यही वह इलाका था, जहां इस मौसम में स्पर्म ह्वेलें आमतौर से दिखाई देती हैं। हम सब लोग इस बात पर आश्चर्य कर रहे थे कि आखिर कप्तान अहाब कैसे इतनी सारी ह्वेलों के बीच मोबी डिक नाम की अपनी सफेद

ह्वेल की खोज करेगा। लेकिन लगता था कि उसने भी अपनी योजना खूब सोच-विचार करके बना रखी थी।

हमारे जहाज़ को ननटुकेट से चले अब तक लगभग डेढ़ साल होने को आया था, लेकिन अब तक हमने किसी भी बंदरगाह में लंगर नहीं डाला था और न रास्ते में रुकने की ज़रूरत ही थी, क्योंकि हमारे जहाज़ में तीन साल के लिए खाने और पीने की चीज़ें भरी हुई थीं। ह्वेलों के शिकार पर निकलने वाले सभी जहाज़ ऐसा ही करते हैं। वे खाने की चीज़ों के अलावा हज़ारों बोतलों में भरकर पीने का पानी भी जहाज़ में जमा कर लेते हैं। यात्री जहाज़ों और माल ढोने वाले जहाज़ों को बंदरगाहों पर रुक-रुककर चलना पड़ता है और अपने लिए खाना और पीना लेते रहना पड़ता है। ह्वेल के शिकारी जहाज़ इस झंझट से मुक्त होते हैं।

चीन सागर से आगे बढ़ने पर एक दिन हमने देखा कि कुछ मील दूर बहुत-सी ह्वेल एक कतार बांधकर तैर रही हैं और ऊंची-ऊंची फुहार उड़ा रही हैं। ऐसा सुन्दर दृश्य मैंने आज तक कभी नहीं देखा था। कप्तान अहाब ने जहाज़ को फौरन उस ओर मोड़ने का हुक्म दिया। सारी पालें तान दी गईं और जहाज़ तेज़ी से आगे बढ़ने लगा। मल्लाहों के तीनों दल अपनी-अपनी नावों के पास जमा हो गए। तीनों हारपूनिये भी अपने हथियार लेकर तैयार हो गए।

सभी ह्वेलें फुहार उड़ाने में इतनी मस्त थीं कि हमारा जहाज़ जब उनसे दो मील पास तक पहुंच गया, तब कहीं जाकर उन्हें पता लगा कि उनका पीछा किया जा रहा है। अचानक अब उनमें भगदड़ मच गई। कप्तान ने हुक्म दिया और फौरन तीनों नावें समुद्र में उतार दी गईं। मल्लाह तेज़ी से ह्वेलों पर हमला करने के लिए आगे बढ़ने लगे। कुछ दूर जाकर हमने एक ह्वेल को घेर लिया। घंटों की लड़ाई के बाद वह ह्वेल काबू में आई। अब तक हमने जितनी ह्वेलें मारी थीं, उनमें वह सबसे भयानक ह्वेल

थीं। सच पूछिए तो उसने हमारे छक्के छुड़ा दिए थे। मैं मन ही मन यह सोचकर घबरा रहा था कि अगर इस इलाके में ऐसी ही ह्वेलों से पाला पड़ना है तो भगवान ही हमारा मालिक है। अगर यहां की मामूली ह्वेलें इतनी खतरनाक हैं तो मोबी डिक कैसी होगी—यह सोचकर मेरे रोंगटे खड़ हो गए। उस ह्वेल ने एक-एक करके हमारी तीनों नावों को उलट दिया। न मालूम कितने बर्छे हमने उस पर फेंके। लेकिन जैसे उस पर कोई असर ही नहीं हो रहा था। एक बार तो घायल होकर भी हमसे बच निकलने में सफल हो गई। बड़ी मुश्किल से पीछा करके हमने उसे दुबारा घेरा। जब उसने दम तोड़ा तब समुद्र में घना अंधेरा छा गया था। रात में बड़ी मुश्किल से हम उसे खींचते रहे और सुबह होने पर जब कप्तान अहाब जहाज़ को आगे बढ़ाकर हमारी मदद के लिए पहुंचा तब हमने राहत की सांस ली।

जब इस ह्वेल को काटा गया तो इसके मांस में से बरसों पुराने हारपूनों और बर्छों के साबूत फाल निकले। इनके अलावा पत्थर का एक भाला भी निकला, जिससे हमने अनुमान लगाया कि उस ह्वेल की उम्र बहुत अधिक थी। पत्थर का वह भाला शायद किसी आदिवासी शिकारी ने वर्षों पहले उस पर फेंका था।

इस ह्वेल का सिर काफी बड़ा था और इसमें से बहुत अधिक तेल निकला। यह तेल दूसरी ह्वेलों के तेल की अपेक्षा अधिक सुगन्धित भी था, इसका तेल निकलते समय जहाज़ पर एक दुर्घटना हो गई। ह्वेल के सिर में से तेल निकालने का दृश्य भी देखने लायक होता है। यह ह्वेल लगभग 80 फुट लम्बी थी और इसका सिर कुल लम्बाई के एक-तिहाई से भी अधिक, लगभग 28 फुट लम्बा था। इसके सिर को काटकर जहाज के किनारे लम्बाई में टांग दिया गया। इसके बाद तैश्तेगो कटे हुए भाग के ऊपर चढ़ा और उसने सिर के अन्दर उतरकर उस भाग को खोल दिया, जहां कुएं की तरह तेल भरा हुआ था। ऊपर से डोल लटकाए गए और तैश्तेगो डोलों को नीचे से भरकर ऊपर भेजता रहा।

अचानक चिकने मांस पर उसका पैर फिसल गया और वह ह्वेल की विशाल खोपड़ी के तेल के कुएं में डूब गया। इससे जहाज़ पर जो हलचल मची, उसके कारण ह्वेल का सिर उस हुक से भी छूट गया, जिसके सहारे वह जहाज़ के किनारे टंगा हुआ था। देखते-देखते मछली का सिर तैश्तेगो को अपने अन्दर समाए हुए पानी में डूबने लगा। सभी जहाज़ी घबरा उठे। उनकी समझ में नहीं आया कि अब क्या किया जाए।

इतने में लोगों की नज़र जहाज़ की अगली मुंडेर पर गई, जहां कीकेग नंगे बदन खड़ा था और अपना लम्बा चाकू खोल रहा था। उसने चाकू दांतों में दबाया और फिर छपाक् से समुद्र में कूद गया। काफी देर तक लोग दम साधे लहरों को देखते रहे। थोड़ी देर बाद एक आदमी मस्तूल पर चिल्लाया, "वह देखो, वह पानी से ऊपर एक हाथ उठा हुआ दिखाई दे रहा है। अरे, यह तो कीकेग ही है। वह देखो, वह तैश्तेगो के बाल पकड़-उसे जहाज़ की ओर खींचे ला रहा है। बचा लिया, उसने तैश्तेगो को बचा लिया। नाव उतारो। नाव उतारो!"

तुरन्त एक नाव नीचे उतारी गई। तैश्तेगो बिलकुल बेहोश था। उसको नाव तक खींचते-खींचते कीकेग भी अधमरा-सा हो गया। जहाज़ियों ने दोनों को खींचकर नाव पर डाला और फिर नाव ऊपर जहाज़ पर पहुंचाई गई।

बाद में कीकेग ने बताया कि जब मछली का सिर डूब रहा था तो वह नीचे पानी में ही उसके पास पहुंच गया। फिर उसने अपने चाकू से जल्दी-जल्दी उसमें छेद करके उसमें से तैश्तेगो को बाहर खींच लिया। यह एक अनहोनी घटना थी। इस तरह ह्वेल के सिर में डूबे हुए आदमी को बचाना एक बहुत बड़ी बहादुरी का काम था। कप्तान अहाब ने आगे बढ़कर कीकेग को शाबाशी दी। तैश्तेगो की तबीयत ठीक होने में दो-तीन दिन लग गए।

8

कप्तान अहाब हमारे जहाज़ को अपने रास्ते पर आगे बढ़ाता रहा। कुछ दिनों बाद हमें लन्दन का एक जहाज लौटता हुआ रास्ते में मिला। कप्तान ने अपनी आदत के मुताबिक इस जहाज़ के पास आने पर उसे रुकने का इशारा किया और आवाज लगा-कर अंग्रेज कप्तान से पूछा, "क्यों कप्तान, क्या तुमने रास्ते में सफेद ह्वेल देखी?"

हमने देखा, अंग्रेज कप्तान ने अपने कंधे पर सिपाहियों जैसा एक ओवरकोट डाल रखा था, जिसकी एक बांह खाली झूल रही थी। जवाब में उसने अपनी दूसरी टूटी हुई बांह बाहर निकाल-कर उसे हिलाते हुए कहा, "यह देखते हो! मेरी यह बांह उसी सफेद ह्वेल ने ही काट ली है।"

उसकी बात सुनते ही अहाब अपने को नहीं रोक सका। उसने फौरन अपने सहायकों को हुक्म दिया, "मेरी नाव उतारो! जल्दी उतारो!" फिर वह अंग्रेज कप्तान की ओर मुड़कर बोला, "ठहरो कप्तान, जरा मुझे पूरा किस्सा बताओ। मैं तुम्हारे पास जहाज़ पर आ रहा हूं!"

इस समय अहाब के चेहरे पर एक विचित्र प्रकार की खुशी छाई हुई थी। वह नाव को जल्दी से जल्दी दूसरे जहाज़ के किनारे लगाने के लिए चिल्ला रहा था। जब उसकी नाव जहाज़ के पास पहुंची तो ऊपर से कप्तान ने रस्सी की एक सुन्दर-सी सीढ़ी नीचे लटका दी। लेकिन फिर तुरन्त ही उसे अपनी गलती का पता

चल गया। कप्तान अहाब तो एक पैर से लंगड़ा था, वह सीढ़ी पर चढ़ ही नहीं सकता था। इसलिए ऊपर से क्रेन को घुमाकर वह बड़ा कांटा नीचे लटकाया गया, जिसमें मरी हुई ह्वेल को फंसाकर खींचा जाता है। कप्तान ने कांटे में अपना पैर फंसा दिया और फिर वह उसकी रस्सी को पकड़कर झूल गया। कांटे को ऊपर खींचा गया और दोनों कप्तान आपस में मिले। उनके मिलने का ढंग भी अजीब था। अंग्रेज कप्तान ने अपना टूटा हुआ हाथ आगे बढ़ाया और अहाब ने अपनी टूटी हुई टांग। इस तरह की हड्डी के दोनों डंडे आपस में टकराए। फिर दोनों कप्तान खिलखिलाकर हंस पड़े।

अंग्रेज कप्तान ने अपने टूटे हुए हाथ से इशारा करते हुए बताया, "उधर विषुवत्-रेखा पर पिछले मौसम में मैंने उसे देखा था। मैं शिकार की तलाश में काफी दिन से घूम रहा था। एक दिन हम लोग चार-पांच ह्वेलों के एक दल के पीछे उतरे। मेरी नाव उनमें से एक ह्वेल के साथ अटक गई। वह ह्वेल क्या थी, मानो सर्कस का घोड़ा थी। चक्कर पर चक्कर लगा गई और मेरी नाव के मल्लाह एक तरफ बैठकर रस्सी को नीचे सरकाते रहे। तभी अचानक वह बड़ी ह्वेल समुद्र की तली से उछलती हुई ऊपर आई। उसका सिर और कूबड़ दूध के समान सफेद थे और उसका सारा शरीर सलवटों और झुर्रियों से भरा हुआ था।"

"वह, वही थी! वही मोबी डिक थी।" अहाब अचानक बीच में चीखकर बोला।

"और उसकी बाईं ओर पसली के पास कई हारपून धंसे थे।"

"वे मेरे हारपून थे! मेरे हारपून थे!" अहाब खुशी से चिल्लाया, "हां, आगे बताओ!"

"इतनी बड़ी और ऐसी सफेद ह्वेल मैंने अपनी जिन्दगी में पहले कभी नहीं देखी थी। हालांकि मोबी डिक के बारे में मैंने सुन रखा था, लेकिन मुझे उस पर कभी विश्वास नहीं हुआ था।

उसने बीच में आकर हमारी रस्सी को मुंह में फंसा लिया और उसे झटके देकर काटना शुरू किया। वह इस तरह अपने साथी को बचाना चाहती थी। पता नहीं कैसे, रस्सी मोबी डिक के दांत में फंस गई। अब जब हम अपनी मछली को खींचने लगे तो उस मछली के बजाय मोबी डिक के पास पहुंचने लगे। मैंने अपना हारपून साधकर मोबी डिक पर चला दिया। लेकिन हे भगवान्! क्या पानी उसने उड़ाया! थोड़ी देर के लिए तो हम लोग अंधे ही हो गए। उसने इतनी फुफकारें मारीं और अपनी भयानक पूंछ से पानी में इतने जोर के थपेड़े मारे कि देखते-देखते मेरी नाव के दो टुकड़े हो गए और हम लोग पानी में गोते लगाने लगे। भाग्य की बात! मैंने जान बचाने के लिए उछलकर उसकी पीठ में घुसे हुए एक हारपून के डंडे को पकड़ लिया। मैं थोड़ी देर तक उसकी पीठ पर ही लटका रहा। जब उसने डुबकी मारी और लहर उसके सिर के ऊपर से गुजरी तो मैं दूर जा पड़ा। लेकिन इस बीच, पता नहीं कैसे, एक हारपून का कांटा मेरी बांह में घुस गया और दूसरे ही क्षण मेरी बांह कोहनी से कलाई तक फट गई। मोबी डिक तो गोता लगाकर वहां से ऐसी गायब हुई कि फिर नजर नहीं आई। बाद में मुझे जहाज़ पर लाया गया। घाव इतना गहरा था कि मेरे ठीक होने की कोई उम्मीद नहीं थी, इसलिए मेरे जहाज के डाक्टर ने मेरी बांह को काट देना ही ठीक समझा। बाद में मैंने ह्वेल की हड्डी का यह खूंटा अपनी बांह में बांधने के लिए तैयार करवा लिया!"

अंग्रेज़ कप्तान की कहानी खत्म होने के पहले ही अहाब अपने जहाज़ पर वापस लौटने की उतावली करने लगा। अब उसे मोबी डिक का ठीक-ठीक पता मिल गया था और वह अपना समय गंवाना नहीं चाहता था। वह जल्दी-जल्दी कप्तान से विदा लेकर नीचे नाव पर उतर आया। नाव में वह इतने ज़ोर से कूदा कि उसकी हड्डी की टांग छिटक गई। बाद में उसने हमारे जहाज़ के बढ़ई से अपने लिए नई टांग बनवाई।

जहाज़ पर आकर उसने जल्दी-जल्दी जहाज़ियों को हुक्म देना शुरू किया। जहाज पर मोबी डिक से लड़ाई की तैयारियां जोरों से होने लगीं। दूसरे दिन कप्तान ने जहाज़ के लुहार को अपने पास बुलाया और उसके आगे एक थैली फेंकते हुए कहा, "जाओ, जल्दी से अपनी भट्टी डेक पर निकालकर लाओ। तुम्हें मेरे लिए एक बढ़िया-सा नया हारपून बनाना होगा। इतना बढ़िया और मजबूत हारपून कि वह किसी जहाज में भी छेद कर दे और कभी न टूटे। इस थैली को ले जाओ। इसमें घोड़े की नाल में ठोंकी जाने वाली इस्पात की कीलें भरी हैं। इनको गलाओ और इनसे 12 छड़ें बनाओ और इन छड़ों को एक-साथ पीटकर एक रस्से की डोरियों की तरह लपेटो। फिर मैं तुम्हें अपने पुराने उस्तरे दूंगा, जिनका बढ़िया इस्पात गलाकर तुम्हें हारपून का तीर और उसके कांटे बनाने होंगे। जाओ, जल्दी करो!"

थैली उठाकर लुहार चुपचाप वहां से चला आया और अपने काम में लग गया। कप्तान बीच-बीच में खुद जाकर उसका काम देखता था और उसकी मदद करता था। रात में काफी देर तक वह उसकी धौंकनी भी चलाता रहा।

जब छड़ें तैयार हो गईं तो अहाब ने खुद उनको आपस में रस्से की तरह लपेटकर लोहे का मजबूत डंडा बनाया। इसके बाद वह अपने पुराने उस्तरे निकाल लाया। लुहार ने उनको गलाकर हारपून के लिए तीर और नुकीले कांटे तैयार किए। इस प्रकार जब हारपून का फाल तैयार हो गया तो उसमें एक मजबूत लकड़ी का हत्था (बेंट) जोड़ा गया।

अहाब को दिन-रात एक ही धुन सवार थी कब मोबी डिक उसे मिले और कब वह उस पर अपने इस भयानक हारपून का वार करे। रोज वह हारपून को उठाकर अपने हाथ में तौलता था और मोबी डिक को मारने की कसम खाता था, जहाज़ के मस्तूलों पर दिन-रात जहाज़ियों द्वारा पहरा दिया जाता था।

लेकिन इससे भी अहाब को सन्तोष नहीं होता था। उसने अपने लिए रस्सी की मजबूत टोकरी बनवाई और फिर सबसे ऊंचे मस्तूल पर एक गिर्री बंधवाई। इस टोकरी में बैठकर गिर्री के सहारे वह मस्तूल के सिरे पर पहुंच जाता था और वहां से घंटों आसपास के समुद्र को देखता रहता था।

एक दिन 'राशेल' नाम का एक जहाज़ सामने से हमारे रास्ते में आकर खड़ा हो गया। अहाब को भी अपना जहाज़ रोकना पड़ा। अहाब ने उसके कप्तान से भी सफेद ह्वेल के बारे में पूछ-ताछ की। जवाब में 'राशेल' का कप्तान नाव लेकर हमारे जहाज़ पर आया। आते ही उसने अहाब के पैर पकड़ लिए और उससे कहा, "कप्तान, तुम जानते हो कि मेरा जहाज़ भी ननटुकेट का ही है। मैं तुमसे मदद चाहता हूं। हाल में ही ह्वेलों से हुए एक मुकाबले में हमारी एक नाव कहीं भटक गई है। उसमें मेरा 14 साल का लड़का भी है। कई दिन से मैं उस नाव की खोज कर रहा हूं। तुम मेरी मदद करो। मुझे उम्मीद है कि अगर खोज के काम में तुम्हारे जहाज़ ने भी हाथ बंटाया तो जल्दी ही मुझे अपने बच्चे का पता चल जाएगा।"

अहाब थोड़ी देर तक सोचता रहा। उसके बाद उसका चेहरा कुछ सख्त हो गया और उसने कहा, "नहीं, भाई, मुझे माफ करो। मैं अब मोबी डिक का पीछा एक घंटे के लिए भी छोड़ना नहीं चाहता। मुझे उम्मीद है कि कुछ ही दिनों में मैं मोबी डिक को घेर लूंगा। मैं यहां तक सिर्फ उसकी खोज में आया हूं और अब इस मौके पर मैं ज़रा भी वक्त बरबाद नहीं करना चाहता। तुम मुझे माफ करो!"

'राशेल' के कप्तान ने अहाब की बड़ी मिन्नतें कीं। वह 48 घंटे के लिए हमारे जहाज को किराये पर लेने के लिए भी तैयार हो गया, लेकिन अहाब टस से मस नहीं हुआ। अन्त में निराश होकर 'राशेल' का कप्तान वापस अपने जहाज़ पर लौट गया।

9

अब हमारा जहाज़ प्रशान्त महासागर में विषुवत् रेखा के पास पहुंच गया और शान से आगे बढ़ता चला जा रहा था। लेकिन मोबी डिक का कहीं भी पता नहीं था। अचानक एक रात में अहाब झपटकर अपने केबिन से बाहर निकला और नाक में जोर-जोर से हवा खींचते हुए इधर-उधर सूंघने लगा। फिर उसने चिल्लाकर कहा, "हां, यह गंध किसी स्पर्म ह्वेल की ही हो सकती है। जरूर आसपास कोई ह्वेल है और मेरा मन कहता है कि वह मोबी डिक ही है। जहाज़ियो, सावधान! मोबी डिक अब हमारे फंदे में आनेवाली है!"

रात में किसी ने उसकी बात पर विश्वास नहीं किया। हालांकि उसके हुक्म पर मस्तूलों पर बैठे पहरेदार रात-भर अंधेरे में इधर-उधर अपनी नजरें दौड़ाते रहे, लेकिन दिन निकलने पर अहाब की बात की सच्चाई साबित हो गई। हमने देखा, हमारे आगे समुद्र पर तेल के समान चिकनी एक लम्बी, पतली, सीधी धारी बनी हुई थी। कप्तान ने सब जहाज़ियों को डेक पर आने का हुक्म दिया और फिर चीखकर ऊपर बैठे पहरेदारों से पूछा, "क्यों, तुम्हें कुछ दिखाई दे रहा है? कोई ह्वेल दिखाई दे रही है? जल्दी बताओ!"

"नहीं कप्तान, मीलों दूर तक कुछ नहीं है।" ऊपर से आवाज़ आई।

"नहीं, ऐसा कैसे हो सकता है! मुझे फौरन ऊपर

पहुंचाओ!" यह कहकर अहाब अपनी टोकरी में बैठ गया। हम लोगों ने रस्सी खींची और वह मस्तूल के सिरे पर जा पहुंचा। थोड़ी ही देर में वह चिल्लाया, "वह देखो, बेवकूफो! वह रही! वह देखो, उधर फुहार उड़ा रही है। वह उसकी हिम-पर्वत के कूबड़ देखो। वह है मोबी डिक! मोड़ो जहाज को, उस तरफ मोड़ो!"

फौरन जहाज़ को उसी दिशा में मोड़ा गया। अहाब नीचे उतर आया।

हमले के लिए नावों को तैयार किया जाने लगा। नीचे उतरने पर अहाब ने दहाड़कर कहा, "मस्तूल पर जड़ा सोने का सिक्का मेरा है। मैंने सबसे पहले मोबी डिक को देखा है। लेकिन घबराओ मत! मेरी शर्त अब भी कायम है। जो कोई मोबी डिक को सबसे पहले मारेगा, उसको मैं ऐसे दस सोने के सिक्के इनाम में दूंगा। चलो, तैयार हो जाओ!"

मोबी डिक जब थोड़ी दूर रह गई तो स्टारबक की नाव को छोड़कर बाकी सब नावें नीचे उतर गईं। स्टारबक को कप्तान ने जहाज़ की देख-रेख के लिए छोड़ दिया। हमारी नावें चप्पू चलाती हुईं, तेज़ी से मोबी डिक की ओर बढ़ने लगीं। मोबी डिक अब भी शान्ति से तैर रही थी। ऐसा लगता था, जैसे उसे हमारे आने का पता नहीं था। पास पहुंचने पर नावों के बड़े चप्पू उठा लिए गए और नावें धीरे-धीरे उसकी ओर सरकने लगीं। पास जाने पर हमने देखा कि मोबी डिक की पीठ में एक हारपून का डंडा सीधा खड़ा था। जैसे किसी जहाज़ का मस्तूल हो। थोड़ी ही देर में मोबी डिक ने अपनी पूंछ पानी से ऊपर निकाली। वह पूंछ क्या थी, जैसे संगमरमर की कोई बीस फुट ऊंची मीनार पानी के बीच निकल आई थी। अचानक वह उछली और सिर के बल पानी में गोता लगा गई। इस प्रकार हमने पहली बार मोबी डिक के पूरे शरीर को देखा। उसकी बाईं ओर की पसलियों में भी कई हारपूनों के टुकड़े घुसे हुए थे।

जिस जगह वह गायब हुई, वहां लहरों का एक बड़ा भारी घेरा-सा बन गया।

मोबी डिक के इस तरह अचानक गोता लगा जाने से अहाब को बड़ा दुःख हुआ, क्योंकि वह उस पर हमला करने ही जा रहा था। अब हमारे सामने इंतजार करने के अलावा और कोई चारा नहीं था। थोड़ी देर बाद समुद्री पक्षी अहाब की नाव के ऊपर मंडराने लगे। यह इस बात का संकेत था कि मछली वहीं कहीं फिर से पानी के ऊपर आनेवाली थी। अहाब भी चौकन्ना हो गया। वह नाव के अगले हिस्से में अपना हारपून संभालकर खड़ा हो गया और झुककर पानी में देखने लगा थोड़ी ही देर में उसने देखा कि मोबी डिक का निचला जबड़ा धीरे-धीरे उसकी नाव के नीचे फैलने लगा। वह चिल्लाया, "तो यह बात है! देखा तुम लोगों ने—यह राक्षसी मछली कितनी चालाक है! अभी यह हमारी ओर पीठ किए चुपचाप तैर रही थी और अब यह सीधी हमारी नाव के नीचे है। हे भगवान! मैं इस पर वार भी नहीं कर सकता, क्योंकि अब यह उलटी होकर तैर रही है। होशियार रहो, मुझे इसके दांत दिखाई दे रहे हैं!"

एक क्षण के लिए नाव के प्रत्येक मल्लाह की पसली थर्रा उठी। देखते-देखते मोबी डिक ने एक बड़े भारी आरे जैसा अपना जबड़ा नाव के अगले भाग के ऊपर फैला दिया। बड़ी भारी चट्टान की तरह उसका सफेद सिर अब भी पानी में डूबा हुआ था, लेकिन हमें साफ नजर आ रहा था। दूसरी दोनों नावें इस अचानक आई हुई विपत्ति के सामने जैसे सुन्न पड़ गई थीं।

एक बार तो ह्वेल का निचला जबड़ा सीधा अहाब के सिर के ऊपर गया और अहाब ने अपना हाथ बढ़ाकर उसका एक दांत पकड़ लिया। वह जोर से धक्का देकर मछली को नाव से दूर धकेलने की कोशिश करने लगा, लेकिन अब तक मोबी डिक ने नाव को अपने जबड़े की कैंची में फंसा लिया था। दूसरे ही क्षण उसने जबड़े की कैंची को बन्द कर दिया और नाव कड़कड़ाहट

की आवाज के साथ बीच में से टूटकर दो टुकड़े हो गई।

पलक मारते ही अहाब अपने साथियों के साथ पानी में कूद पड़ा। नाव के दोनों टुकड़े इधर-उधर तैरने लगे और मोबी डिक डुबकी लगाकर कुछ दूर निकल गई। कुछ दूर जाकर उसने फिर अपना सिर पानी के बाहर निकाला और इसके बाद एक बड़े घेरे में तेजी से गोल-गोल चक्कर लगाने शुरू कर दिए। ऐसा लगता था जैसे वह अहाब और उसके साथियों को अपने घेरे से बाहर नहीं निकलने देना चाहती। अहाब और उसके साथी टूटी हुई नाव के टुकड़ों को पकड़कर तैर रहे थे।

दूसरी दोनों नावों के मल्लाह अब भी अहाब की मदद नहीं कर सकते थे, क्यांकि इस हालत में मछली को छेड़ना खतरे से खाली नहीं था। वह आगे बढ़कर पानी में छटपटाते हुए एक-एक मल्लाह को चुनकर अपने जबड़े में भर सकती थी।

दूर जहाज पर से स्टारबक भी इस विचित्र युद्ध को आंखें फाड़कर देख रहा था। वह धीरे-धीरे जहाज़ को पास लाने लगा। अहाब ने पानी में से ही चीखकर आवाज लगाई, "ह्वेल के ऊपर जहाज़ को ले आओ। इसे भगा दो।"

अब जहाज़ झपटता हुआ घेरे के बीच में आ गया। मोबी डिक अपनी पूंछ फटकारती हुई दूर तैर गई। मौका देख-कर दोनों नावें अहाब की मदद के लिए आगे बढ़ीं। अहाब और उसके साथियों को पानी में से खींचकर नावों में चढ़ा लिया गया।

"मेरा हारपून कहां है?" अहाब ने नाव में पहुंचते ही चिल्लाकर पूछा।

उसका हारपून टूटी हुई नाव के टुकड़े में अब भी उसी प्रकार पड़ा था। जहाज़ पर से क्रेनें नाव के टुकड़ों पर साधी गईं और उन टुकड़ों को उठाकर डेक पर पहुंचा दिया गया। थोड़ी देर में सभी नावें जहाज पर पहुंचाई गईं। यह मोबी डिक से हमारी पहली भिड़न्त थी। अंधेरा होने लगा था। अहाब ने

हुक्म दिया, "जहाज़ को ह्वेल के पीछे डाल दो। उसका लगातार पीछा करो। वह रात में धीरे चलेगी। वह जिस तरफ गई है, उस तरफ रात-भर हम उसका पीछा करेंगे और कल सुबह फिर उसे घेरेंगे!'

उस रात हमारे जहाज़ पर बराबर चहल-पहल बनी रही। अहाब अपने डेक की आड़ के सहारे बैठा-बैठा ही ऊंघता रहा।

दूसरे दिन सुबह तीनों मस्तूलों पर नये पहरेदार चढ़ाए गए। थोड़ी ही देर में उन्होंने खबर दी कि जहाज़ ठीक रास्ते पर जा रहा है। सूरज की पहली किरणों के साथ हमने देखा कि पानी पर

तेल-सी चिकनी धारा लम्बी चली गई है। मोबी डिक इसी रास्ते से गई थी। अहाब का कहना ठीक था। कुछ ही घंटों में हमने मस्तूलों पर से पहरेदारों की आवाज सुनी, "वहां वह रही फुहार ! ठीक सामने ! वह रही मोबी डिक !"

हमने देखा, 80 फुट से भी ज़्यादा लम्बी वह राक्षसी ह्वेल कल की तरह आज भी शान्ति से पानी पर लेटी हुई थी और फुहार उड़ा रही थी। उसी तरह समुद्री पक्षी उसके ऊपर मंडरा रहे थे।

"नावों को उतारो !" अहाब चिल्लाया।

सभी जहाज़ी अपनी-अपनी नावों में कूद गए और नावें नीचे उतार दी गईं। स्टारबक आज भी देखभाल के लिए जहाज़ पर ही रहा।

आज मोबी डिक ने नई चाल चली। नावों के पास आते ही अचानक वह घूम पड़ी और सीधी नावों की ओर बढ़ी। हम लोग इस हमले के लिए तैयार नहीं थे। जब तक हम अपने-अपने हारपून और बर्छे संभालें, तब तक उसका चट्टानी सिर अहाब की सबसे आगे बढ़ी हुई नाव के ठीक सामने आ गया। ह्वेल अपनी विशाल पूंछ को फटकारती हुई जबड़े खोलकर सीधी चली आ रही थी। हारपूनियों ने निशाना साधकर अपने-अपने हारपून चलाने शुरू किए। देखते-देखते ह्वेल पर हारपूनों की वर्षा होने लगी और हमारी नावों से लेकर मोबी डिक तक बीसियों रस्सियों का एक चन्दोवा-सा तन गया। मोबी डिक ज़ोरों से छटपटाने लगी और रस्सियों में उलझ गई। अब हमारी नावें स्वयं ही खिंचकर उसके पास पहुंचने लगीं। थोड़ी देर के लिए वह शांत पड़ गई। हमने रस्से और ढीले किए। लेकिन अचानक मोबी डिक ने स्टब और फ्लास्क की अधिक उलझी हुई नावों को अपनी पूंछ के झपट्टों से अपने बहुत पास खींच लिया। दोनों नावें आपस में इतनी ज़ोरों से टकरा गईं कि उनके सारे जहाज़ी लुढ़ककर पानी में जा गिरे।

अहाब की नाव अब भी रस्सों को खींच रही थी और सफेद व्हेल की चपेट से अपने-आपको बचाने की कोशिश कर रही थी। अहाब ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रहा था। पानी में गिरे हुए जहाज़ी अब अपनी उलटी हुई नावों के पास पहुंच गए थे और उन्हें पकड़कर तैर रहे थे। सफेद व्हेल इससे बेखबर हुई अब भी पानी को ज़ोरों से मथे जा रही थी। थोड़ी ही देर में उसने सभी रस्सियों को तोड़ दिया। उसकी पीठ में धंसे हुए हारपूनों में बंधी रस्सियों के टुकड़े अब भी उसके आसपास लिपटे हुए थे। उसने दो बार गोते लगाए और फिर वह युद्ध-स्थल से काफी दूर निकल गई। स्टारबक ने तेज़ी से जहाज़ आगे बढ़ाया। एक नाव नीचे उतारी गई। तैरते हुए जहाज़ियों, रीलों चप्पुओं और जो कुछ भी हाथ आया, उस सबको उठाकर सुरक्षा के साथ जहाज़ के डेकों पर पहुंचा दिया गया। थोड़ी देर बाद अहाब की नाव भी डेक पर पहुंच गई। एक घंटेभर के बाद अंधेरा होने लगा। अहाब ने सभी जहाज़ियों को डेक पर इकट्ठा किया और फिर अचानक वह चिल्ला पड़ा—"फिदाउल्ला! फिदाउल्ला कहां है?"

हमने देखा, सचमुच फिदाउल्ला गायब था। शायद वह रसियों में फंसकर मोबी डिक के साथ ही खिंचा चला गया था।

"तो आज हमें अपने एक जहाज़ी की बलि देनी पड़ी! दोस्तो, फिदाउल्ला को मोबी डिक ले गई। लेकिन अब वह अहाब से बचकर जा नहीं सकेगी।" कप्तान ने गुस्से से अपना पैर पटकते हुए कहा, "कल का दिन उसकी मौत का दिन है। खुदा कसम, कल मैं उस राक्षसी व्हेल को अपने इसी हारपून से मारूंगा और उसे सिर और पूंछ के बल बांधकर अपने जहाज़ के किनारे लटका दूंगा। हे भगवान! मेरी मदद करना!"

स्टारबक एक ओर हाथ बांधे चुपचाप खड़ा था। अचानक उसने आगे बढ़कर कहा, "कप्तान! मेरी बात सुनो। यह ज़िद अच्छी नहीं है। मोबी डिक का पीछा छोड़ दो। पिछले दो दिनों

में तुमने उसे हारपूनों से छेद डाला है। इतना काफी है। अब उसे अपनी मौत मरने दो और वापस लौट चलो।"

"क्या कहा? वापस लौट चलूं!" अहाब ने दहाड़कर कहा, "खबरदार! वापस लौटने का नाम मत लेना स्टारबक! तुम एक बहादुर जहाज़ी हो। ज़िन्दगीभर तुमने मेरा साथ दिया है। मैं जानता हूं कि इस आखिरी लड़ाई में भी तुम मेरा साथ दोगे। लेकिन कभी-कभी तुम्हारे दिल में कबूतर फड़फड़ाने लगता है। तुम अब बूढ़े होने को आए हो। बूढ़ा तो देखो, मैं भी हो रहा हूं। मैं भी जल्दी ही तुम्हारी तरह साठ साल का हो जाऊंगा। घबराओ मत! इस लड़ाई में जीत अहाब की ही होगी। तुम मुझे पागल समझते हो न? हां, मैं पागल हूं। मैं मोबी डिक को मारे बिना चैन नहीं लूंगा और न तुमको चैन लेने दूंगा। जाओ, सब लोग आराम करो! टूटी हुई नावों को ठीक करो। चुपचाप यहां से चले जाओ!" यह कहकर वह झपटता हुआ अपने केबिन में घुस गया।

फिदाउल्ला की मौत का हम सबको बड़ा अफसोस था। सचमुच वह बड़ा बहादुर आदमी था और खतरे से कभी नहीं घबराता था। स्टारबक बड़बड़ाता हुआ एक ओर चला गया और हम लोग भी अगल दिन की तैयारी में लग गए।

तीसरे दिन जब सूरज निकला तो हमने समुद्र पर वह चिकनी तेल की पट्टी नहीं देखी, अहाब फौरन डेक पर निकल आया और झुंझलाकर बोला, गलती हो गई! मुझसे बहुत बड़ी गलती हो गई। हमारा जहाज़ शायद रात में ज़्यादा आगे निकल आया है। मोबी डिक कहीं पीछे ही छूट गई है। मोड़ो जहाज़ को वापस, पीछे मोड़ो!"

जहाज़ को वापस मोड़ा गया। अहाब अपनी टोकरी में बैठकर मस्तूल पर जा पहुंचा और वहां से आसपास के समुद्र पर नज़रें दौड़ाने लगा।

कुछ घंटों के बाद मोबी डिक की फुहार दिखाई दी। हम

सबने एक साथ ही उसे देखा । अहाब ऊपर से ही चिल्लाया, "वह रही ! नावों को नीचे उतारो । जल्दी करो ! मुझे फौरन नीचे उतारो !"

जब तक नावें नीचे उतारी गईं, मोबी डिक जहाज़ के काफी पास आ गई थी । जब अहाब की नाव नीचे उतरने लगी तो स्टारबक ने एक बार फिर उसे रोकने की कोशिश की ।

"चुप रहो ! तुम अपना काम संभालो । जहाज़ तुम्हारे ज़िम्मे है ।" फिर उसने अपने साथी से चीखकर कहा, "मुंह क्या देख रहे हो ! नाव नीचे उतारो !"

आज मैं अहाब की नाव पर था । दोनों नावें हमसे आगे निकल गई थीं । हमारी नाव भी तेज़ी से जहाज़ के अगले हिस्से की ओर बढ़ी । वहां तक पहुंचते-पहुंचते ह्वेल बिलकुल हमारे सामने आ गई । हम तेज़ी से चप्पू चलाने लगे । पता नहीं क्यों, शार्क मछलियों ने दूसरी दोनों नावों का साथ छोड़ दिया और वे हमारे आसपास मंडराने लगीं । मेरा कलेजा कांप गया । मछलियां हमारे चप्पुओं को दांतों से पकड़कर छील रही थीं । चप्पुओं के फाल छोटे पड़ते जा रहे थे । मोबी डिक हमारे सामने ही गोता लगा चुकी थी । वह सीधी हमारी नाव के पास निकलना चाहती थी । थोड़ी देर में जब वह बाहर आई तो अपनी पूंछ के थपेड़ों से ऊंची-ऊंची लहरें उठाती हुई सीधी जहाज़ की ओर लपकी । अहाब के मुंह से चीख निकल गई, "हाय ! आज यह हमारे जहाज़ को तोड़ना चाहती है ।"

और सचमुच मोबी डिक ने हमारी नावों से बचते हुए सीधे जहाज़ पर हमला किया । हम जल्दी-जल्दी उसके पीछे दौड़े और थोड़ी देर के लिए हमारी आंखें फटी की फटी रह गईं । हमने देखा मोबी डिक की बाईं पसली पर धंसे हुए हारपूनों और बर्छों के बीच उलझी हुई रस्सियों में फिदाउल्ला का शरीर भी फंसा हुआ था । रात-भर ह्वेल के साथ पानी में घिसटते रहने से उसके हाथ-पैर टूट गए थे । अहाब ने भी एक क्षण

के लिए चौंककर अपनी आंखों पर हाथ रख लिए । लेकिन फिर दूसरे ही क्षण हम मोबी डिक पर टूट पड़े । मोबी डिक ने हमारे हारपूनों और बर्छों की कोई परवाह नहीं की । उसने दो नावों को पानी में उलट दिया और फिर अपने सिर से जहाज़ के अगले भाग में ज़ोर से टक्कर मारी । जहाज़ में एक बहुत बड़ा छेद हो गया और उसमें से होकर पानी अन्दर घुसने लगा । अहाब चिल्लाया, "अरे, अपना जहाज़ गया ! हाय ! मेरा जहाज़ ! लोगो, क्या मेरा 'पिकोड' नहीं बचाओगे !" वह पागल की तरह चीख रहा था । मोबी डिक ने जहाज़ में दो-तीन टक्करें और मारीं । देखते-देखते जहाज़ डूबने लगा । मोबी डिक बार-बार हमसे दूर तैरती जाती थी और गोता लगाकर जहाज़ की ओर झपटती थी ।

जहाज़ में तेज़ी से पानी भर रहा था । स्टारबक और दूसरे जहाज़ी जहाज़ को छोड़कर समुद्र में कूदने की तैयारी कर रहे थे । इतने में मोबी डिक ने घूमकर हमारी नाव पर वार किया । उसके एक धक्के में ही तीन जहाज़ी नाव से छिटककर पानी में आ गिरे । उन तीन में से एक मैं भी था । मेरे बाकी दो साथी तो किसी तरह अहाब की मदद के लिए फिर नाव पर जा पहुंचे, लेकिन मैं पीछे ही रह गया । इतने में मैंने देखा कि अहाब ने अपना बड़ा हारपून उठाया और सीधा ह्वेल की ओर फेंक दिया । हारपून की रस्सी सनसनाती हुई आगे निकली और फिर पता नहीं कैसे, नाव के अगले सिरे के किसी खांचे में अटक गई । अहाब उसे सुलझाने के लिए झुका । उसने उसे सुलझा लिया, पर अचानक, पता नहीं कैसे, उसकी गर्दन रस्सी की लपेट में आ गई और वह नाव से बाहर आ गिरा । यह सारी घटनाएँ एक-दो क्षणों में ही हो गईं । देखते-देखते अहाब आंखों से ओझल हो गया । नाव दोनों जहाज़ियों को लिए हुए ही टूटकर सीधी मोबी डिक के नीचे चली गई । मोबी डिक इतने ज़ोरों से फुहारें छोड़ रही थी कि चारों तरफ पानी पर एक धुंध-सी छा

गई थी। मुझे कभी अपना डूबता हुआ जहाज़ दिखाई देता था, कभी किसी जहाज़ी का सिर दिखाई देता था और कभी बुरी तरह छटपटाती हुई मोबी डिक की पूंछ पानी में थपेड़े मारती नज़र आती थी और फिर थोड़ी देर के लिए कोई ऊंची लहर मुझे उठाकर कई गज दूर फेंक देती थी।

और सब कुछ समाप्त हो गया। मोबी डिक ने आखिरी गोता लगाया। मैं जानता था कि अब वह मरकर ही ऊपर आएगी और उधर मेरा जहाज़ भी डूब चुकने को ही था। थोड़ी देर तक बड़े मस्तूल का सिरा पानी के ऊपर हिलता रहा और फिर वह भी आंखों से ओझल हो गया। जहाज़ के डूबने से एक बड़ी भारी भंवर बनी और टूटी हुई नावें और छटपटाते हुए जहाज़ी कब उसमें समा गए, मुझे पता नहीं चला, क्योंकि मैं खुद भंवर की लपेट में आ ही रहा था कि एक ऊंची लहर ने मुझे उठाकर परे फेंक दिया। जब पानी कुछ शान्त हुआ तो मैंने देखा जहाज़ डूबने की जगह लकड़ी का एक काला-सा पीपा तैर रहा था। मैंने लपककर उस पीपे को पकड़ लिया।

उस पीपे की सहायता से मैं लगभग एक दिन और एक रात समुद्र पर तैरता रहा। दूसरे दिन मुझे एक जहाज़ की पाल नज़र आई। धीरे-धीरे जहाज़ मेरे पास आया और फिर मुझे उठाकर उसके डेक पर पहुंचा दिया गया। ऊपर पहुंचने पर मैंने पहचाना कि यह वही 'राशेल' नाम का जहाज़ था, जिसके कप्तान ने अहाब से अपने खोए हुए बच्चे की खोज करने की प्रार्थना की थी। 'राशेल' के कप्तान को अब तक न तो अपनी खोई हुई नाव ही मिली थी और न अपना बच्चा ही मिला था। उसने अपने जहाज़ में मुझे शरण दी और कुछ दिनों बाद ननटुकेट पहुंचा दिया। इस तरह उस सफेद ह्वेल मोबी डिक और उसके साथ हुई कप्तान अहाब की आखिरी मुठभेड़ की कहानी कहने के लिए मैं बचा रहा!

●●●

मुद्रक : लक्ष्मी प्रिन्टइंडिया, दिल्ली–32

किशोरों के लिए उपन्यास

गुलिवर की यात्राएं (Gulliver's Travels)
राबिन्सन क्रूसो (Robinson Crusoe)
खज़ाने की खोज में (Treasure Island)
चांदी का बटन (Kidnapped)
कठपुतला (Pinnochio)
वीर सिपाही (Ivanhoe)
चमत्कारी तावीज़ (Talisman)
तीसमारखां (Don Quixote)
तीन तिलंगे (Three Musketeers)
काला फूल (Black Tulip)
कैदी की करामात (Count of Monte Cristo)
डेविड कापरफील्ड (David Copperfield)
बर्फ की रानी (Andersen's Fairy Tales)
रॉबिनहुड (Robinhood)
जादू का दीपक (Arabian Nights)
अस्सी दिन में दुनिया की सैर
(Around the World in 80 Days)
समुद्री दुनिया की रोमांचकारी यात्रा
(20 Thousand Leagues under the Sea)
जादूनगरी (Alice in Wonderland)
मूंगे का द्वीप (Coral Island)
बहादुर टॉम (Tom Sawyer)
परियों की कहानियां (Grimms' Fairy Tales)
सिंदबाद की सात यात्राएं
(The Seven Voyages of Sindbad)
ईसप की कहानियां (Aesop's Fables)
मोबीडिक (Moby Dick)
जंगल की कहानी (Call of the Wild)

शिक्षा भारती